• जयपुर, मंगलवार, 22 अक्टूबर 24 • वर्ष 14 • अंक 66 • पृष्ठ : 8 • मूल्य : 1 रुपये

www.chamaktarajasthan.in| Email : chamaktarajasthan8789@gmail.com

डाक पंजीयन संख्याः RJ/JPC/D19/2024-25

RNI. No. RAJHIND/2011/40950

दैनिक राज्य तथा केंद्र द्वारा मान्यता प्राप्त

सच के साथ मजबूती से बढ़ाये क़दम

चमकता राजस्थान

जयपुर से प्रकाशित एवं प्रसारित

विज्ञापन के लिए : 93145 05000

अजमेर, सीकर, झुंझनुं, सवाईमाधोपुर, चित्तौड़गढ़, बूँदी, धौलपुर, हिंडौन, भरतपुर, झालावाड़, जोधपुर, बीकानेर से प्रसारित

पेज @3 प्रदेश कॉर्डिनेशन कमेटी की बैठक में प्रत्याशी चयन की प्रक्रिया पूरी...

पेज @4 पुलिस शहीद दिवस पर जयपुर में राज्य स्तरीय कार्यक्रम...

पेज @8 डीजीपी डिस्क के लिए एडीजी मालिनी अग्रवाल, विशाल बंसल ...

सुविचार

''सत्य को हज़ार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी हर एक सत्य ही होगा।''

● **स्वामी विवेकानंद**

सफाई कर्मचारियों की भर्ती में सफाईकर्मियों की मांगों के अनुरूप संशोधन कर नियमों का किया सरलीकरण

सफाई कर्मचारियों का कल्याण राज्य सरकार की प्राथमिकता: मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

चमकता राजस्थान

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि सफाईकर्मियों की राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका है। वे हमें बीमारियों और गंदगी से बचाकर स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। उन्होंने कहा कि सफाईकर्मियों की सुरक्षा, सम्मान और कल्याण राज्य सरकार की प्राथमिकता और जिम्मेदारी है। मुख्यमंत्री शर्मा सोमवार को संयुक्त वाल्मीकि श्रमिक संघ द्वारा आयोजित स्वागत समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने नगरीय निकायों में होने वाली करीब 24 हजार सफाई कर्मचारियों की भर्ती में सफाईकर्मियों की मांगों एवं सुझावों के अनुरूप संशोधन कर नियमों का सरलीकरण किया है और लॉटरी के माध्यम से पारदर्शी तरीके से भर्ती का काम किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सफाईकर्मियों को उनका यह हक पहले ही मिल जाना चाहिए था लेकिन पूर्ववर्ती सरकार ने इन भर्तियों को अटकाने, लटकाने और भटकाने का काम किया। इससे पहले भी 2018 में हमारी ही सरकार ने 21 हजार से अधिक पदों पर सफाईकर्मियों की भर्ती की थी।

शर्मा ने कहा कि सफाई कर्मचारी विषम परिस्थितियों में काम करते हैं। ऐसी स्थिति में उनके स्वास्थ्य का ख्याल रखते हुए आरजीएचएस के तहत फेफड़ों, किडनी एवं त्वचा से संबंधित बीमारियों के निःशुल्क इलाज की व्यवस्था की गई है। साथ ही, सफाई कर्मचारियों को राज्य सरकार द्वारा रियायती दर पर ऋण भी उपलब्ध करवाया जा रहा है। इस दौरान मुख्यमंत्री ने वाल्मीकि समाज के छात्रावास हेतु भूमि आवंटन तथा जोधपुर में नवल जी महाराज का पैनोरमा बनवाने का सकारात्मक आश्वासन दिया।

5 वर्षों में सरकारी व निजी क्षेत्रों में सृजित होंगे 10 लाख रोजगार के अवसर

शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश के युवाओ के हितों के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उनके लिए अधिक से अधिक रोजगार के अवसर सृजित करना सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि परीक्षाओं में पूर्ण पारदर्शिता सुनिश्चित करते हुए इस वर्ष 1 लाख एवं पांच साल में कुल 4 लाख पदों पर भर्ती की जाएगी। इसके साथ ही निजी क्षेत्रों में भी अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध करवाते हुए पांच वर्षों में कुल 10 लाख रोजगार सृजित किए जाएंगे। श्री शर्मा ने कहा कि भर्तियां समयबद्ध रूप से पूरी हो, इसके लिए आगामी दो साल के लिए राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड के माध्यम से भर्तियों का कैलेण्डर भी जारी कर दिया गया है और परीक्षाओं की तिथि तय कर दी गई है। मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि भारत सरकार द्वारा करवाए जाने वाले स्वच्छ सर्वेक्षण में सफाई कर्मियों के सहयोग से राजस्थान अच्छा प्रदर्शन करेगा। कार्यक्रम में वाल्मीकि समाज के प्रतिनिधियों और सफाईकर्मियों ने मुख्यमंत्री को माला पहनाकर एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर लगभग 24 हजार सफाईकर्मियों की भर्ती के लिए आभार जताया। इस अवसर पर विधायक कालीचरण सराफ, जयपुर ग्रेटर नगर निगम महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर, जयपुर हेरिटेज नगर निगम महापौर (कार्यवाहक) श्रीमती कुसुम यादव, जयपुर ग्रेटर नगर निगम उप महापौर पुनीत कर्णावट, संयुक्त वाल्मीकि एवं सफाई श्रमिक संघ के अध्यक्ष नंदकिशोर डंडोरिया, नवल सम्प्रदाय के संत सुनील महाराज सहित विभिन्न जनप्रतिनिधि, वाल्मीकि समाज के प्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में सफाईकर्मी उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री ने देश को दिया स्वच्छता का मंत्र

मुख्यमंत्री ने कहा कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2 अक्टूबर, 2014 को स्वयं झाड़ू उठाकर स्वच्छ भारत अभियान का आगाज किया था। उन्होंने देशवासियों को स्वच्छता का मंत्र दिया और आज स्वच्छ भारत अभियान एक 'जन आदोलन' का रूप ले चुका है, क्योंकि इसे पूरे देश की जनता का अपार समर्थन मिल रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री जी ने देश के सफाईकर्मियों का आभार व्यक्त करने के लिए प्रयागराज में कुंभ के दौरान उनके चरण धोए थे। शर्मा ने कहा कि बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर को देश ही नहीं बल्कि दुनिया भर में बहुत आदर से देखा जाता है। उन्होंने कहा कि यूके यात्रा के दौरान मैंने लंदन में किंग हेनरी रोड स्थित ऐतिहासिक अम्बेडकर हाउस का दौरा किया। यह स्थान बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी से जुड़ी अमूल्य स्मृतियों, उनके जीवन के महत्वपूर्ण प्रसंगों और उनके द्वारा किए गए अभूतपूर्व कार्यों का साक्षी रहा है।

न्यूज अपडेट

यूपी में जाति, धर्म, मजहब और पार्टी देखे बिना अपराधियों पर होगी कार्रवाई : नंद गोपाल नंदी

सुल्तानपुर/एजेंसी। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार में कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल नंदी रविवार को सुल्तानपुर दौरे पर थे। यहां पर उन्होंने प्रदेश में नौ सीटों पर होने वाले विधानसभा उपचुनाव में सभी सीटों को विकास के दम पर जीतने का दावा किया और अपराधियों पर कठोर कार्रवाई करने की बात कही। यूपी के बहराइच हिंसा में राम गोपाल मिश्रा की हत्या को लेकर उन्होंने कहा कि विपक्ष पूरी तरह हतोत्साहित है। सबने देखा है कि जब प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार हुआ करती थी, उस समय लोग नारा लगाते थे, जिस गाड़ी पर सपा का झंडा, समझो उस गाड़ी में बैठा गुंडा। सपा के गुंडों का मनोबल इतना ऊंचा था कि एक सीओ (सर्किल ऑफिसर) को स्कॉर्पियो की बोनट पर बैठाकर, दौड़ाते थे।

उन्होंने कहा कि आज वही पुलिस, वही शासन और वही अमला है। लेकिन अगर अपराधी पुलिस पर गोली चलाएगा और हमला करेगा को छोड़ा नहीं जाएगा।

मुख्यमंत्री से अमेरिकी राजदूत की मुलाकात

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राइजिंग राजस्थान में अमेरिकी निवेशकों को किया आमंत्रित

चमकता राजस्थान

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से सोमवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में भारत में अमेरिकी राजदूत एरिक गार्सेटी ने मुलाकात की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने आगामी 9 से 11 दिसम्बर को आयोजित होने वाले राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट में श्री गार्सेटी एवं अमेरिकी निवेशकों को आमंत्रित किया। इस अवसर पर शर्मा ने कहा कि राज्य में अक्षय ऊर्जा, खनन, आईटी और विनिर्माण क्षेत्र में निवेश की अपार संभावनाएं हैं। राज्य सौर एवं पवन ऊर्जा के क्षेत्र में देश में पहले स्थान पर है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा एक नई पर्यटन नीति लाई जा रही है, जिसमें निवेशकों को कई तरह के लाभ दिए जाएंगे। राज्य में कौशल विकास, आईटी, बुनियादी ढ़ांचे के आधुनिकीकरण एवं रक्षा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निरंतर कार्य किए जा रहे हैं तथा इन क्षेत्रों में निवेशकों के लिए ढेरों अवसर हैं।

मुख्यमंत्री ने राज्य में जलवायु, सतत विकास, ग्रीन टैक्नोलॉजी, स्वास्थ्य सेवा और चिकित्सा अनुसंधान, पर्यटन सहित विभिन्न क्षेत्रों में अमेरिकी साझेदारी एवं सहयोग पर जोर दिया। श्री शर्मा ने अमेरिकी विश्वविद्यालयों के राजस्थान में कैम्पस खोलने, जीसीसी एवं डाटा सेन्टर के क्षेत्र में भी काम करने के लिए आमन्त्रित किया। अमेरिकी राजदूत ने महिला विकास, ऊर्जा, शहरी विकास, खेलकूद इत्यादि के क्षेत्र में भी अमेरिका द्वारा सहयोग की इच्छा व्यक्त की। श्री गार्सेटी के नेतृत्व में आए प्रतिनिधिमण्डल ने शर्मा द्वारा दिए प्रस्तावों पर गहन रूचि दिखाई।

इस अवसर पर प्रतिनिधिमण्डल में यूएस एम्बेसी से आर्थिक मामलात अधिकारी डेमन ड्यूबोर्ड, वरिष्ठ राजनैतिक सलाहकार ए. सुकेश, वाइस कौंसिल एलेक्जेण्डर व्हाइट, राजनैतिक अधिकारी श्रीमती हिना राव, अतिरिक्त मुख्य सचिव, (मुख्यमंत्री कार्यालय) शिखर अग्रवाल, प्रमुख शासन सचिव उद्योग अजिताभ शर्मा उपस्थित रहे।

एकता कपूर और उनकी मां की मुश्किलें बढ़ी, पोक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज

मुंबई/एजेंसी।

टेलीविजन की 'क्वीन' कही जाने वाली एकता कपूर और उनकी मां शोभा कपूर मुश्किल में फंस गई हैं। दोनों के खिलाफ पोक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है। यह मामला उनकी वेब सीरीज 'गंदी बात' के छठे सीजन से जुड़ा हुआ है। एकता कपूर और उनकी मां शोभा कपूर, दोनों मिलकर ओटीटी प्लेटफॉर्म आल्ट बालाजी चलाती हैं। इस प्लेटफॉर्म पर कई बोल्ड वेब सीरीज स्ट्रीम होती हैं, जिनमें से एक है 'गंदी बात'। इस सीरीज के छठे सीजन को लेकर कुछ आपत्तिजनक दृश्यों के कारण मामला दर्ज हुआ है। मामला दर्ज करने वालों का आरोप है कि सीरीज में कुछ ऐसे दृश्य हैं जो नाबालिगों के साथ यौन शोषण को बढ़ावा देते हैं। इसी वजह से उनके खिलाफ पोक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है। एकता कपूर ने अभी तक इस मामले पर कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है। हालांकि, उनके करीबी सूत्रों का कहना है कि वे इस मामले को गंभीरता से ले रही हैं और कानूनी सलाह ले रही हैं।

● **एकता कपूर ने टीवी से शुरू किया था करियर**

पिता जीतेंद्र या भाई तुषार कपूर की तरह भले ही एकता कपूर ने अभिनय में हाथ न आजमाया हो, लेकिन टीवी की दुनिया में उन्होंने बतौर प्रोड्यूसर खूब नाम कमाया। वह टीवी की क्वीन कही जाती हैं।

दोनों वायु सेनाओं के बीच गहन सहयोग की उम्मीद

कलाईकुंडा में शुरू हुआ भारत-सिंगापुर की वायु सेनाओं का हवाई अभ्यास

नयी दिल्ली । एजेंसी

- **दोनों वायु सेनाओं के लड़ाकू बेड़े संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण अभ्यास में लेंगे हिस्सा**
- **अभ्यास का द्विपक्षीय चरण होगा 13 से 21 नवंबर तक**

भारत और सिंगापुर की वायु सेनाओं के बीच सोमवार को पश्चिम बंगाल के कलाईकुंडा वायु सेना स्टेशन पर संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण अभ्यास शुरू किया। अभ्यास का द्विपक्षीय चरण 13 से 21 नवंबर तक होगा, जिसमें दोनों वायु सेनाओं के बीच गहन सहयोग होने की उम्मीद है, क्योंकि वे उन्नत वायु युद्ध सिमुलेशन, संयुक्त मिशन योजना और डीब्रीफिंग सत्रों में भाग लेंगे। यह अभ्यास वर्षों के सहयोग और संयुक्त अभ्यासों के साथ-साथ भारत और सिंगापुर के बीच आपसी सम्मान के कारण बने मजबूत द्विपक्षीय रक्षा संबंधों को उजागर करता है। वायु सेना के अनुसार प्रशिक्षण अभ्यास के 12वें संस्करण में भारतीय वायु सेना राफेल, मिराज-2000 आईटीआई, एसयू-30 एमकेआई, तेजस, मिग-29 और जगुआर विमानों के साथ भाग लेगी। सिंगापुर गणराज्य वायु सेना के साथ द्विपक्षीय चरण का उद्देश्य दोनों वायु सेनाओं के बीच अंतर-संचालन क्षमता को बढ़ाना, युद्ध की तैयारी को तेज करना और ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देना है। अभ्यास में सिंगापुर वायु सेना अब तक की अपनी सबसे बड़ी टुकड़ी के साथ भाग ले रही है, जिसमें एफ-16, एफ-15 स्क्वाड्रन के एयर क्रू और सहायक कर्मी शामिल हैं। इसके अलावा जी-550 एयरबोर्न अर्ली वार्निंग एंड कंट्रोल और सी-130 विमान भी शामिल हैं। भारत और सिंगापुर के बीच संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण अभ्यास दोनों देशों के बीच हस्ताक्षरित द्विपक्षीय समझौते के तहत किया जाता रहा है। यह अभ्यास भारतीय वायु सेना के सबसे बड़े बहुराष्ट्रीय हवाई अभ्यासों में से एक एक्स-तरंग शक्ति में रॉयल सिंगापुर एयर फोर्स की भागीदारी के ठीक बाद हो रहा है, जो दोनों वायु सेनाओं के बीच बढ़ते पेशेवर सहयोग को दर्शाता है। हवाई संचालन के अलावा दोनों वायु सेनाओं के कर्मी सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान करेंगे, क्योंकि वे अगले सात हफ्तों में कई खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों के दौरान बातचीत करेंगे।

कश्मीर पाकिस्तान नहीं बनेगा-नहीं बनेगा-नहीं बनेगा: फारूक अब्दुल्ला

श्रीनगर/एजेंसी।

जम्मू-कश्मीर के गांदरबल आतंकी हमले में 7 लोगों की मौत हो गई. गांदरबल अटैक पर अब फारूक अब्दुल्ला ने पाकिस्तान और आतंकियों को सख्त लहजे में चेताया है. फारूक अब्दुल्ला ने साफ कह दिया कि कश्मीर किसी भी कीमत पर पाकिस्तान नहीं बनेगा. उन्होंने गांदरबल आतंकी हमले की कड़ी निंदा की और पाकिस्तान के हुक्मरानों को खबरदार किया. गांदरबल पर फारूक अब्दुल्ला ने पाकिस्तान को खबरदार करते हुए कहा कि कश्मीर पाकिस्तान नहीं बनेगा तो नहीं बनेगा. उन्होंने कहा, 'दरिंदों ने इनको शहीद किया. यह बहुत दर्दनाक है. दरिंदे समझते हैं कि यहां पाकिस्तान बनेगा? कई सालो से देख रहे हैं. पाकिस्तान के हुकमरानों से कहना चाहता हूं कि अगर सच में भारत से दोस्ती चाहते हैं तो ये बंद कीजिए. '

खुली आंखों से समानता के साथ न्याय करने का संदेश

प्रधान न्यायाधीश (सीजेआइ) डीवाई चंद्रचूड़ ने भारतीय न्याय प्रणाली की अनेक विसंगतियों एवं विषमताओं को दूर करते हुए अब न्याय की देवी की मूर्ति की आंखों से काली पट्टी हटा दी गई है। इसके साथ ही मूर्ति की हाथ में तलवार की जगह संविधान ने ले ली है। यह कानून को सर्वद्रष्टा एवं भारतीयता का रंग देने की एक सार्थक एवं समयोचित पहल है। सांकेतिक रूप से देखा जाए तो कुछ महीने पहले लगी न्याय की देवी की नई मूर्ति साफ संदेश दे रही है कि न्याय अंधा नहीं है और वह संविधान के आधार पर काम करता है। इस सराहनीय कदम के बावजूद एक बड़ा सवाल है कि क्या मूर्ति की आंखों से पट्टी हटा देने का असर कानूनी प्रक्रिया पर पड़ेगा? भारत में न्याय प्रणाली पर आम धारणा है कि पुलिस और अदालतें लोगों की जिंदगी को तबाह कर देती हैं, वर्षों लम्बी न्याय प्रक्रिया झेलने के बाद भी लोगों को समुचित न्याय नहीं मिल पाता है। न्याय में देरी न्याय के सिद्धांत से विमुखता है, न्याय प्राप्त करना और इसे समय से प्राप्त करना किसी भी आदर्श न्याय व्यवस्था में आम व्यक्ति का नैसर्गिक अधिकार होता है। लेकिन यह स्थिति कब बनेगी? क्या न्याय की देवी की मूर्ति में परिवर्तन करने से न्याय प्रक्रिया में कुछ बदलाव हो सकेगा?

खुली आंखों से समानता के साथ न्याय करने का संदेश देने वाला यह बदलाव सुप्रीम कोर्ट की जजों की लाइब्रेरी में लगी न्याय की देवी की प्रतिमा में हुआ है। इस प्रतिमा में न्याय की देवी को भारतीय वेषभूषा में दशार्या गया है। वह साड़ी में दर्शाई गई हैं। सिर पर सुंदर का मुकुट भी है। माथे पर बिंदी, कान और गले में पारंपरिक आभूषण भी नजर आ रहे हैं। जो प्रतीकात्मकता में बदलाव का संकेत है और भारत में न्याय की उभरती भावना को दशार्ता है। लेकिन नई प्रतिमा जिन मूल्यों एवं मानकों की ओर इशारा कर रही है, क्या उसे समझने एवं देखने की हमारी तैयारी है? अगर इस प्रतीकात्मक बदलाव के मूल उद्देश्य को हम नहीं समझ पायेंगे तो यह बदलाव भी अर्थहीन ही होगा। निश्चित ही प्रधान न्यायाधीश चंद्रचूड़ की अगुवाई में सुप्रीम कोर्ट और न्याय व्यवस्था पारदर्शिता की ओर कदम बढ़ा रही है। लगातार यह संदेश देने की कोशिश हो रही है कि न्याय सभी के लिए है, न्याय के समक्ष सब बराबर हैं और कानून अब अंधा नहीं है। अब न्याय की देवी के एक हाथ में तराजू और दूसरे हाथ में पुस्तक है जो संविधान जैसी दिखती है।

यह सर्वविदित एवं लोगों में आम धारणा है कि थाना-पुलिस और कोर्ट-कचहरी का चक्कर लगा-लगा कर आम आदमी की जिंदगी तबाह हो रही है, तब मूर्ति की आंखों से पट्टी हटाकर भला क्या सुधर जाना है? न्याय की देवी को सच में आंखें देनी हैं तो कानून में आमूल-चूल परिवर्तन, त्वरिता, समयबद्धता एवं समानता की जरूरत होगी। यह तो चीफ जस्टिस भी जानते हैं। आखिर किसे नहीं पता कि इस देश में सड़क से लेकर अदालत तक, हर जगह कानून की धज्जियां उड़ती हैं और न्याय की देवी यूं ही स्टैच्यू बनी रहती हैं। कोई हरकत नहीं, बिल्कुल संवेदनहीन। सड़कों पर कानून तमाशबीन बनकर खड़ा है, थाने में वह उगाही और उत्पीड़न का अस्त्र बना है तो अदालतों में दलीलों और तारीखों की बेइंतहा ऊबाऊ प्रक्रिया का जटिल हिस्सा है, जिसकी जकड़न में गए तो खैर नहीं। अब तक अंधे कानून की त्रासदी न्याय की देवी देख नहीं पाती थीं, अब वो खुली आंखों से सब देखेंगी। कम-से-कम उम्मीद तो कर ही सकते हैं कि देख पाने के कारण न्याय की देवी की मूर्ति में भी संवेदना जग जाए। जस्टिस चंद्रचूड़ ने वाकई अच्छी पहल की है, उसका स्वागत होना चाहिए। 1983 को एक फिल्म अंधा कानून रिलीज हुई थी। इस फिल्म एवं इसके गाने में कोर्ट-कचहरी, वकील-दलील, सुनवाई-फैसले के हालात को शब्द दिए गये हैं। कहा गया कि अस्मतें लुटीं, चली गोली, इसने आंख नहीं खोली। फिर गीत कहता हैं- लंबे इसके हाथ सही, ताकत इसके साथ सही। पर ये देख नहीं सकता, ये बिन देखे है लिखता। इस तरह फिल्म कानून को अंधा बताती है। स्थिति यह है कि आज भी न्यायालयों में यह चर्चा अमूमन होती है कि अदालत में पेश होने वाले अभियोजन या अभियोग पक्ष के रुतबे को देखकर न्याय प्रभावित हो जाता है। लेकिन उस समय की मूर्ति की मूल भावना कहां और कितनी प्रभावी रही है, यह सर्वविदित है। अब नयी संशोधित प्रतिमा का संदेश है कि देश में न्याय अंधा नहीं है, वह इस बात पर जोर देती है कि भारत में न्याय दूरदर्शिता और समानता के साथ काम करता है। जो संतुलन और निष्पक्षता का प्रतीक है-यह दशार्ता है कि न्यायालय किसी निर्णय पर पहुँचने से पहले सभी पक्षों से तथ्यों और तर्को को तौलता है। इसका मतलब है कि कानून की नजर में सभी बराबर हैं, इसमे न पैसे वाले का महत्व, न रुतबा, ताकत और हैसियत को महत्व दिया जाता है।

न्याय की देवी, जिसे हम अक्सर अदालतों में देखते हैं, असल में यूनान की देवी हैं। उनका नाम जस्टिया है और उन्हीं के नाम से 'जस्टिस' शब्द आया है। उनकी आंखों पर बंधी पट्टी दिखाती है कि न्याय हमेशा निष्पक्ष होना चाहिए। 17वीं शताब्दी में एक अंग्रेज अफसर पहली बार इस मूर्ति को भारत लाए थे। यह अफसर एक न्यायालय अधिकारी थे। 18वीं शताब्दी में ब्रिटिश राज के दौरान न्याय की देवी की मूर्ति का सार्वजनिक रूप से इस्तेमाल होने लगा। भारत की आजादी के बाद भी हमने इस प्रतीक को अपनाया। यह बदलाव औपनिवेशिक शासन के अवशेषों को हटाने के अन्य प्रयासों को दशार्ता है, भारत गुलामी के सभी संकेतों से बाहर निकलना चाहता है। जैसे कि हाल ही में आपराधिक कानूनों में बदलाव, भारतीय दंड संहिता की जगह भारतीय न्याय संहिता को लागू करना है। यहां नई मूर्ति के नए संकेतों का अर्थ गहराई से समझना भी जरूरी है। न्याय समाज में संतुलन का प्रतिनिधित्व करें, न्यायिक संचालन-प्रक्रिया सांविधानिक प्रावधानों के अनुरूप चले। सबको समान रूप से देखें। हम न्याय की देवी द्वारा इंगित मूल्यों में संजीदगी दिखाये।

हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि आखिर भारतीय न्याय-व्यवस्था को लेकर आम धारणा इतनी कटु क्यों है? यह क्यों माना जाता है कि यहां न्याय देर से मिलता है, जबकि अदालतों में तारीखें अनवरत मिलती रहती हैं? जिस सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय की वकालत की गई है, उसे वास्तविक अर्थों में साकार करने में हम अब तक क्यों विफल रहे हैं? जब तक इन सवालों के उचित जवाब हम नहीं खोज लेते हैं, तब तक न्याय की देवी के प्रतीक-चिह्नों की सार्थकता कठघरे में खड़ी की जाती रहेगी।

भारत की प्रगति अवरुद्ध करने का षड़यंत्र

रमेश शर्मा

पूरे देश में स्कूलों, हवाई अड्डों, विमानों को बम से उड़ाने की धमकी, रेल पटरियों पर कहीं डेटोनेटर, कहीं लकड़ी के गट्ठर, कहीं गैस सिलेंडर मिलने लगे। इसके साथ हिन्दू त्यौहारों पर हमले बढ़ गये। यह भारतीय समाज जीवन में भय, आतंक और तनाव फैला कर प्रगति अवरुद्ध करने का नया षड्यंत्र है। इसमें भारत विरोधी अंतरराष्ट्रीय और भारत के भीतर की दोनों शक्तियों का गठजोड़ दिखता है। देशभर में हुए दुर्गा विसर्जन में पथराव और बहराइच में क्रूरता पूर्वक की गई हत्या के दर्द से देश उबरा भी नहीं था कि भारतीय विमानों को उड़ाने की धमकियाँ आने लगीं। दुर्गा विसर्जन से शरद पूर्णिमा के बीच चार दिनों में कुल उन्नीस धमकियाँ मिलीं। सावधानी के लिये सात उड़ानों को या तो स्थगित किया गया अथवा आपात लैंडिंग की गई। कुछ तो ऐसे विमानों की भी आपात लैंडिंग हुई जो विदेश जा रहे थे। हालाँकि विमानों को उड़ाने धमकी भरे ईमेल या फोन और हिन्दू त्यौहारों पर हमलों की घटनाएँ पहले भी हुई हैं। लेकिन पिछले छै महीनों से भारतीय समाज जीवन में आतंक और तनाव फैलाने वाली इन घटनाओं में बाढ़ सी आ गई है। ये घटनाएँ तीन प्रकार की हैं। इनमें स्कूल, अस्पताल और विमानों और विमानतलों को बम से उड़ाने की धमकियाँ सोशल मीडिया अथवा ईमेल से आईं, दूसरा रेल पटरियों पर कहीं डेटोनेटर, कहीं गैस सिलेंडर, कहीं पत्थर, कहीं लकड़ी के गट्ठर तो कहीं लोहे की राड रखकर रेल दुर्घटना करने का कुप्रयास हुआ और हिन्दु त्यौहारों पर हमले। भारत में ये घटनाएँ नई नयी हैं, ऐसी घटनाएँ पहले भी हुई हैं लेकिन पिछले छह महीनों में घटी घटनाओं में अंतर है। एक तो संख्या में कई गुना बढ़ोत्तरी हुई है, दूसरे क्रूरता बढ़ी है। हमलों और पथराव का यह क्रम कांवड़ यात्राओं से आरंभ हुआ था। जो गणेशोत्सव और दुर्गा उत्सव में निरंतर बढ़ता रहा। दुर्गाउत्सव में ऐसा कोई दिन नहीं बीता जब दो चार स्थानों से झांकियों पर पथराव का समाचार न आया हो। कुछ घटनाओं में तो झांकियों के भीतर घुसकर प्रतिमा खंडित करने और महिलाओं के साथ मारपीट करने के समाचार भी आये। बहराइच में भीड़ की आक्रामकता से हमलावरों की क्रूरता आसानी समझी जा सकती है। यह सब ऐसे समय हो रहा है जब भारत में एकजुटता की आवश्यकता थी। इन दिनों भारत विकास की नई अंगड़ाई ले रहा है। आर्थिक समृद्धि से लेकर अंतरिक्ष की ऊँची उड़ान तक नये कीर्तिमान बन रहे हैं। यह विश्व में भारत की बढ़ती साख और प्रतिष्ठा का नया अध्याय है कि गाजा पट्टी का तनाव रोकने और यूक्रेन-रूस युद्ध के समाधान के लिये दुनिया भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से आगे आने की अपेक्षा कर रही है। भारत की यह प्रगति और प्रतिष्ठा की मंजिल नहीं है, पहला चरण है। लक्ष्य तो विश्व में सर्वश्रेष्ठ स्थान अर्जित करने का है। इसके लिये प्रधानमंत्री मोदी ने वर्ष 2047 निर्धारित किया है। वह भारत की स्वतंत्रता का शताब्दी वर्ष होगा। मोदीजी का संकल्प है कि स्वतंत्रता की शताब्दी वर्षगांठ पर भारत राष्ट्र विश्व में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर प्रतिष्ठित हो। यह काम केवल मोदीजी के संकल्प और सरकार की नीति निर्णयों से नहीं होगा। इसके लिये संपूर्ण भारत और भारत वासियों को एकजुट होकर आगे बढ़ना होगा। तभी वर्तमान प्रगति यात्रा अनवरत रह सकेगी और भारत का परम् वैभव पुनर्प्रतिठित हो सकेगा। जिस समय संपूर्ण राष्ट्र में एकत्व और सक्रियता की आवश्यकता है तब बम से उड़ाने की धमकियों से आतंक का वातावरण बनाना, रेल की पटरियों को क्षतिग्रस्त करके समाज जीवन में भय उत्पन्न करना और हिन्दू त्यौहारों पर लगातार हमले करके साम्प्रदायिक तनाव उत्पन्न करना साधारण नहीं हो सकता। यह आशंका निराधार नहीं हो सकती कि यह भारत की विकास गति अवरुद्ध करने का षड्यंत्र है। इन तीनों के परिणाम पर विचार करें तो इसमें देश विरोधी गहरे कुचक्र की गंध आती है। किसी न किसी स्तर पर इन तीनों प्रकार की घटनाओं के सूत्र एक दूसरे से जुड़े लगते हैं। चूँकि ये घटनाएँ किसी प्राँत या क्षेत्र में घटीं हों इनमें साम्य है। तीनों प्रकार की सर्वाधिक घटनाएँ उत्तरप्रदेश में घटीं। इसके अतिरिक्त बंगाल, असम, राजस्थान, झारखंड, छत्तीसगढ़, तेलंगाना, कर्नाटक, महाराष्ट्र और गुजरात से भी आईं। इन सभी प्राँतों के समाज जीवन में बहुत विविधता है। लेकिन सभी प्राँतों में तनाव फैलाने वाली घटनाओं की शैली एक ही है। रेल पटरियों पर अवरोध खड़ा करने और फिश प्लेट ढीली करने की आरंभिक घटनाएँ कैमरे की नजर में आ गईं थीं। जिससे पुलिस आरोपियों तक पहुँच गई थी और कुछ गिरफ्तारी भी हुई। लेकिन बाद की घटनाओं में आरोपितों ने सावधानी बरती और घटना के लिये वे स्थान चुने गये जो कैमरे की पहुँच से दूर हों। इसी प्रकार स्कूल, अस्पताल और हवाई जहाज को बम से उड़ाने की धमकी भरे ईमेल भी बहुत योजना से भेजे गये। ये भेजे तो भारत से ही भेजे गये थे पर अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क से। ताकि आसानी से पकड़ में न सकें। रेल पटरियों पर अवरोध खड़ा करने की घटनाओं में जो सावधानी दूसरे चरण में बरती गई, बम से उड़ाने की धमकी भरे ईमेल में वह सावधानी पहले दिन से बरती गई। किसी भी परिवार, समाज या राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि के लिये सबको एकजुट होना आवश्यक है। सबके साथ से ही सबका विकास संभव है। लेकिन यदि परिवार समाज या राष्ट्र के आंतरिक वातावरण में तनाव है, भय है या टकराव है तो सबसे पहले विकास गति ही प्रभावित होती है। पिछले दस वर्षों से भारत ने जो विकास गति पकड़ी है उससे आयात घटा है, आत्मनिर्भरता बढ़ी है। यह भारत की विकसित तकनीकि का प्रमाण है की अब दुनियाँ के पन्द्रह देश अपने उपग्रहों के प्रक्षेपण में भारतीय तकनीकी की सहायता ले रहे हैं। इससे चीन जैसे अनेक देश ही नहीं अमेरिका और कनाडा की भी एक विशेष लॉबी चिंतित है। इन लॉबियों का गठजोड़ बांग्लादेश के सत्ता परिवर्तन में देखा जा सकता है। वह कहने के लिये छात्र आँदोलन था लेकिन परदे के पीछे वे कट्टरपंथी थे जिनकी मानसिकता भारत और सनातन विरोधी रही है। आंदोलन के साथ हिन्दू मंदिरों और बस्तियों को निशाना बनाया गया। सत्ता परिवर्तन के बाद दुर्गा उत्सव पर लगातार हमले हुये। वह मुकुट भी गायब कर दिया गया जो प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी बांग्लादेश यात्रा के समय भेंट किया था। केवल दुर्गा उत्सव के दौरान हमलों और हत्याओं की पैंतीस बड़ी घटनाएँ घटीं जो अंतराष्ट्रीय मीडिया में आईं। इसे सामान्य नहीं माना जा सकता कि बंगलादेश में कट्टरपंथियों की सफलता के बाद ही भारत में हमले बढ़े हैं। भारत के भीतर दो प्रकार की धाराएँ काम कर रहीं हैं। एक वह राजनैतिक धारा जो सनातन धर्म और परंपराओं को समाप्त करना चाहते हैं। वे अपने उद्देश्य को छुपाते भी नहीं हैं। खुलकर सनातन धर्म को डेंगू- मलेरिया के वायरस जैसा बता कर समाप्त करने की बात करते हैं। दूसरी कट्टरपंथियों की वह धारा है जो मुसलमानों में राष्ट्र की मूलधारा से अलग एकजुटता और आक्रामकता बनाये रखने का अभियान चला रही है। यह केवल भारत में नहीं चल रहा। पाकिस्तान बंगलादेश और अफगानिस्तान सहित भारत के सभी पड़ोसी देशों में चल रहा है। इसे पाकिस्तान और बांग्लादेश के सत्ता परिवर्तन और उसके बाद की घटनाओं से समझा जा सकता है। यह केवल संयोग नहीं है कि पाकिस्तान की सत्ता परिवर्तन के बाद बंगलादेश के घटनाक्रम में तेजी आई और बंगलादेश के सत्ता परिवर्तन के बाद भारत में कट्टरपंथ की गतिविधियाँ तेज हुई। बांग्लादेश के घटनाक्रम के बाद भारत के कट्टरपंथियों का मनोबल कितना बढ़ा, इसकी झलक कश्मीर, उत्तर प्रदेश, बंगाल, आसाम और तेलंगाना आदि राज्यों में कुछ धर्मगुरुओं के भाषणों की शैली से समझा जा सकती है। इस शैली को सनातन परंपराओं की कांवड़ यात्रा या हिन्दू त्यौहारों पर हमलों से अलग नहीं देखा जा सकता। इसका लाभ उन अंतराष्ट्रीय शक्तियों को मिला जो भारत की विकास गति अवरुद्ध करना चाहती हैं। कट्टरपंथियों का उद्देश्य भारत में अपना वर्चस्व बनाना है तो अंतराष्ट्रीय शक्तियों का उद्देश्य भारत की विकासगति कमजोर करना है। दोनों को अपनी सफलता का सूत्र भारत में भय आतंक और टकराव का सामाजिक वातावरण बनाने में ही दिखता है। पिछले छह माह से भारत में घटने वाली घटनाओं से दोनों के उद्देश्य पूरे हो रहे हैं।

हिन्दू त्यौहारों पर हमलों से साम्प्रदायिक तनाव बढ़ने लगा तो रेल पटरियों पर अवरोध करने और रेल दुर्घटनाओं से समाज में भय उत्पन्न हुआ और विमान की उड़ानों और विमानतल उड़ाने की धमकियों से पूरे प्रशासन को बचाव की सावधानी में लगाना। समाज जीवन की कार्यशीलता भी प्रभावित हुई। यदि तनाव, टकराव और भय का यह वातावरण लंबे समय तक चला तो निःसंदेह भारत की विकास गति प्रभावित होगी जो कुछ अंतराष्ट्रीय शक्तियाँ चाहतीं हैं। इसलिये पूरे समाज को जागरुकता रहने की, संगठित रहने की और समरस रहने की आवश्यकता है। ताकि देश विरोधी शक्तियों का षड्यंत्र सफल न हो। चूँकि संगठित और सुदृढ़ समाज की देश विरोधी शक्तियों का सामना कर सकता है।

अंधा कानून : पांच करोड़ मुकदमे पैंडिग और मीलार्ड मूर्ति बदल रहे हैं !

मनोज कुमार अग्रवाल

भारत की सबसे बड़ी अदालत में 'न्याय की देवी' वाली प्रतिमा में बड़े बदलाव किए गए हैं. अबतक इस प्रतिमा पर लगी आंखों से पट्टी हटा दी गई है. वहीं, हाथ में तलवार की जगह भारत के संविधान की प्रति रखी गई है. सुप्रीम कोर्ट के सूत्रों का कहना है कि यह नई प्रतिमा पिछले साल बनाई गई थी और इसे अप्रैल 2023 में नई जज लाइब्रेरी के पास स्थापित किया गया था. लेकिन अब इसकी तस्वीरें सामने आई हैं जो वायरल हो रही हैं.पहले इस प्रतिमा में आंखों पर बंधी पट्टी कानून के सामने समानता दिखाती थी. इसका अर्थ था कि अदालतें बिना किसी भेदभाव के फैसला सुनाती हैं. वहीं, तलवार अधिकार और अन्याय को दंडित करने की शक्ति का प्रतीक थी. हालांकि अब सुप्रीम कोर्ट जजों की लाइब्रेरी में लगी न्याय की देवी की नई प्रतिमा में आंखें खुली हुई हैं और बाएं हाथ में संविधान है। सवाल यह है कि इस बदलाव से क्या देश की न्याय व्यवस्था में कुछ सकारात्मक परिणाम आएगा? क्या देश के सुप्रीम कोर्ट के जजो के चयन की प्रक्रिया से कालेजियम का ग्रहण हटाया जाएगा? क्या देश की अदलतो में न्याय की गुहार कर रहे लंबित पांच करोड़ मुकदमों की सुनवाई पूरी हो जाएगी? क्या एक गरीब आदमी को सस्ता सुलभ न्याय दे पाएंगे?

आपको बता दें कि मान्यता है कि न्याय का सिद्धांत सबके लिए समान है, और न्याय की देवी इसका प्रतीक मानी जाती हैं। सदियों से न्याय की देवी को विश्वभर की अदालतों में तराजू तलवार और आंखों पर बंधी पट्टी के साथ दशार्या जाता है। यह प्रतीक न्याय के निष्पक्ष और समान वितरण को दशार्ता है, जहां सभी बिना भेदभाव के बराबर होते हैं। मगर सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में एक महत्वपूर्ण बदलाव करते हुए न्याय की प्रतीक देवी की प्रतिमा को नया रूप दिया है। भारतीय संविधान लागू होने के 75वें वर्ष में न्याय की देवी की आंखों पर बंधी पट्टी हटा दी गई है, और अब उनके हाथ में तलवार की जगह संविधान है।

न्याय की मूर्ति में इस बदलाव को लेकर अधिकतर सकारात्मक प्रतिक्रियाएं आ रही है और काननू के जानकारों के द्वारा इसको सही ठहराया जा रहा है। हालांकि, इस फैसले पर राजनीति गरमा गई है, जिसमें शिवसेना उद्धव बालासाहेब के नेता संजय राउत ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। शिवसेना के यूबीटी सांसद संजय राउत ने न्याय की देवी की आंखों से पट्टी हटाने के निर्णय की आलोचना करते हुए सवाल उठाया है और कहा है कि न्यायालय का काम संविधान की रक्षा करना और संविधान के तहत न्याय करना है, लेकिन अभी सुप्रीम कोर्ट में क्या हो रहा है? आखिर वे न्याय की देवी के हाथों से तलवार हटाकर उसे संविधान से बदलने का फैसला कर क्या साबित करना चाहते हैं? वे पहले ही संविधान को मार रहे हैं और

अब न्याय की देवी की आंखों पर बंधी पट्टी हटाकर भ्रष्टाचार और संविधान की हत्या को खुलेतौर पर दिखाना चाहते हैं। यह भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रोपेगैंडा और अभियान है। राजनीतिक पार्टियों द्वारा भले ही न्याय की मूर्ति में बदलाव को राजनीतिक मुद्दा बनाने की कोशिश की जा रही है, लेकिन यह बदलाव सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की पहल पर हुआ है। उनकी सोच है कि भारत को अपनी अंग्रेजी विरासत से आगे बढ़ने की आवश्यकता है। उनका मानना है कि न्याय की आंखें खुली होनी चाहिए, ताकि सभी के साथ समानता का व्यवहार हो। उनका कहना है कि अदालतें संविधान के आधार पर न्याय करती हैं और तलवार का प्रतीक हिंसा का होता है, जिसे हटाकर सबिधान का स्थान दिया गया है। इस नई प्रतिमा में तराजू को बनाए रखा गया है, ताकि यह दिखाया जा सके कि अदालतें फैसला करने से पहले दोनों पक्षों को बराबरी से सुनती और तौलती हैं। दरअसल न्याय की देवी यानी लेडी ऑफ जस्टिस का इतिहास कई हजार साल पुराना है। इसकी अवधारणा प्राचीन ग्रीक और मिस्र की सभ्यता के दौर से चली आ रही है। न्याय की देवी, जिसे लेडी जस्टिस भी कहते हैं, की प्राचीन छवियां मिल की देवीमाता से मिलती-जुलती हैं। मात मिस्त्र के प्राचीन समाज में सत्य और व्यवस्था की प्रतीक थीं। ग्रीक पौराणिक कथाओं में न्याय की देवी थ्रीमिस और उनकी बेटी डिकी हैं, जिन्हें एस्ट्राया के नाम से भी जाना जाता है। प्राचीन यूनानी दैवीय कानून और रीति-रिवाजों की प्रतिमूर्ति देवी थेमिस और उनकी बेटी डिकी की पूजा करते थे। डिकी को हमेशा तराजू लिए हुए चित्रित किया जाता था और ऐसा माना जाता था कि वह मानवीय कानून पर शासन करती है। प्राचीन रोम में डिकी को जस्टिटिया के नाम से भी जाना जाता था। ग्रीक देवी 'थीमिस' कानून, व्यवस्था और न्याय का प्रतिनिधित्व करती थी, जबकि रोमन सभ्यता में देवी 'मात' थी, जो कि व्यवस्था के लिए खड़ी एक ऐसी देवी थी, जो तलवार और सत्य के पंख रखती थी। हालांकि, मौजूदा न्याय की देवी की सबसे सीधी तुलना रोमन न्याय की देवी जस्टिटिया से की जाती है। ग्रीक सभ्यता दुनिया की ज्ञात सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक है। ग्रीक सभ्यता में हजारों देवी-देवताओं की मान्यता रही है। वहां खेत, अंगूर, शराब, पानी, हवा, आकाश, रंगमंच, संगीत जैसी हर चीज के लिए एक देवी या देवता रहा है। प्राचीन ग्रीक के लोग अगाध भाग्यवादी थे और अपने हर कर्म में दैवीय मौजूदगी को मानते थे। यह उनके आध्यात्मिक प्रतीक थे, यह उनका दर्शन था, जिनसे वे मार्गदर्शन लिया करते थे। न्याय के लिए भी उन्होंने अपनी कल्पना से ऐसी फिलासफी सामने रखी, जो एक ऐसे प्रतीक के रूप में सामने आई जो दुनिया भर में अपनाई गई। पुनर्जागरण काल में यूरोप में मिथकों की निर्माण भी चलता रहा। नए उभरे गणराज्यों में न्याय की देवी नागरिकों के लिए कानून और न्याय की एक शक्तिशाली प्रतीक बन गई। यह राजाओं के दैवीय अधिकार के सिद्धांत का समर्थन करती थी, लेकिन इसमें लोकतांत्रिक सिद्धांतों के साथ न्याय की निष्पक्षता का महत्वपूर्ण सिद्धांत अहम था। न्याय की देवी के प्रतीक को दशार्ने वाली कलाकृतियां, पेंटिंग, मूर्तियां दुनिया भर में पाई जाती हैं। उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, यूरोप, अफ्रीका, मध्य- पूर्व, दक्षिणी एशिया, पूर्वी एशिया और ऑस्ट्रेलिया की अदालतों, कानून से जुड़े दफ्तरों, कानूनी संस्थाओं और शैक्षणिक संस्थानों में न्याय की देवी की प्रतिमाएं और तस्वीरें देखने को मिलती हैं। यूनानी सभ्यता से न्याय की देवी यूरोप और अमेरिका पहुंची। इसे भारत ब्रिटेन के एक अफसर लेकर आए थे। इसे 17वीं सदी में एक अंग्रेज न्यायालय अधिकारी भारत लाया था। ब्रिटिश काल में 18वीं शताब्दी के दौरान न्याय की देवी की मूर्ति का सार्वजनिक इस्तेमाल किया जाने लगा। भारत की आजादी के बाद न्याय की देवी को उसके प्रतीकों के साथ भारतीय लोकतंत्र में स्वीकार किया गया। अगर देखा जाए तो न्याय की मूर्ति में ये बदलाव के पीछे जो सोच है, वह सकारात्मक कही जा सकती है। सुप्रीम कोर्ट ने देश को संदेश दिया है कि अब कानून अंधा नहीं है। मुख्य न्यायाधीश माननीय चंद्रचूड़ का मानना है कि अंग्रेजी विरासत से अब आगे निकलना चाहिए। वो सबको समान रूप से देखता है। इसलिए न्याय की देवी का स्वरूप बदला जाना चाहिए। यह कानून को सर्वद्रष्टा बताने की कोशिश है। मगर जरूरी है कि देश की सिर्फ न्याय की देवी की मूर्ति में बदलाव नहीं हो, बल्कि देश की न्यायायिक प्रक्रिया में भी बदलाव हो। मौजूदा परिस्थितियों में किसी मामले में न्याय पाने के लिए थाना पुलिस और कोर्ट कचहरी का चकर लगाते लगाते जिंदगी तबाह हो जाती है। न्याय की देवी की मूर्ति में परिवर्तन सही है, लेकिन सबसे बड़ी जरूरत है कि देश की सड गल रही न्यायिक प्रक्रिया में आमूल-चूल परिवर्तन हो, करोड़ों लंबित मुकदमों का निबटान हो लोगों को समयबद्ध न्याय सुलभ कराने की व्यवस्था की जाओ ताकि लोगों को सही समय पर सुलभ तरीके से नयाय मिल सकें, तभी न्याय की मूर्ति में बदलाव के मायने सार्थक होंगे वरना इस तरह का बदलाव महज छलावा और आम आदमी को बहाने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।देश की अदालतों में लंबित पांच करोड़ मुकदमे न्याय व्यवस्था की हकीकत बयान करते हैं।तीस हाइकोर्ट में 169000 मुकदमे तो तीस साल पुराने हैं ऐसी न्याय व्यवस्था में मूर्ति बदल कर बदलाव आने की कल्पना महज मूर्खता ही कही जा सकती है और संविधान की प्रति का भी मखौल है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

देश को सांप्रदायिकता की आग में झोंकते कुंठाग्रस्त लोगों के विमर्श

तनवीर जाफरी

भारतीय मीडिया विशेषकर इलेक्ट्रानिक मीडिया इन दिनों जितने निम्नस्तर पर जाकर अपने दर्शकों को उकसा और वरगला कर उनमें धार्मिक उन्माद व नफरत पैदा कर रहा है वैसा पहले कभी नहीं देखा गया। ऐसा लगता है कि पिछले दस वर्षों से मीडिया को देश में नफरत फैलाने और साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण करने की खुली छूट मिली हुई है। झूठी खबरें प्रसारित करना,टी वी एंकर्स द्वारा झूठे ट्वीट करना फिर अपने उसी ट्वीट को डिलीट कर देना,अपनी विचारधारा से मेल न खाने वाले टी वी वार्ता के पैनल्स के सदस्यों को अपमानित करना,उनके साथ गली गलोच करना और यदि वह मुसलमान है तो उसे सीधे तौर पर मुल्ले, कटुवे या आतंकवादी, पाकिस्तानी, जिहादी आदि कुछ भी कहकर संबोधित करना बिल्कुल आम बात होती जा रही है। नफरती संस्कारों में परवरिश पाने वाले यह लोग अपने अपनी उम्र व अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि देखे बिना कभी किसी उच्चाधिकारी को अपमानित कर बैठते हैं तो कभी भारत के मुख्य न्यायाधीश तक के प्रति ऐसे अपशब्द अपने मुंह से निकालते हैं जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। पिछले दिनों उत्तर प्रदेश के बहराइच में महराजगंज क्षेत्र में दुर्गा प्रतिमा विसर्जन के दौरान साम्प्रदायिक हिंसा भड़क उठी थी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार दुर्गा प्रतिमा विसर्जन में शामिल सैकड़ों लोग मुस्लिम बाहुल्य इलाके से डी जे पर तेज आवाज में कुछ आपत्तिजनक गाने बजाते हुये गुजर रहे थे। हालांकि उत्तर प्रदेश सरकार ने जुलूसों में डी जे के प्रयोग पर पाबन्दी लगा रखी है। उसके बावजूद डी जे पर तेज आवाज में धर्म विशेष को अपमानित करने वाले गाने बजाये जा रहे थे। खबर है कि मुसलमानों की तरफ से कुछ लोगों ने डी जे बंद करवाने के लिये कहा परन्तु भीड़ ने डी जे तो बंद नहीं किया परन्तु उग्र जरूर हो गयी। इसके बाद मुसलमानों के घरों को निशाना बनाते हुये तोड़फोड़ व आगजनी शुरू होगयी। इसी बीच राम गोपाल मिश्रा नामक एक गरीब नव विवाहित युवक जो भंडारों में लंगर बनाने का काम करता है वह आवेश में एक मुस्लिम व्यक्ति के घर की छत पर चढ़ गया। उसने छत पर इस्लामी प्रतीक के रूप में लगे झंडे को गिराने की कोशिश की जिससे झंडे के साथ ही छत की रेलिंग भी टूट गई। इसके बाद आक्रोशित

BAHRAICH POLICE
@bahraichpolice
Follow

112

बहराइच पुलिस
अपील

दिनाँक 13.10.2024 को कस्बा महाराजगंज थाना हरदी जनपद बहराइच में घटित घटना में एक हिन्दू व्यक्ति की हत्या के सम्बन्ध में सोशल मीडिया में साम्प्रदायिक सौहार्द को बिगाड़ने के उद्देश्य से भ्रामक सूचना जैसे मृतक को करंट लगाना, तलवार से मारना एवं नाखून उखाड़ना आदि बातें फैलाई जा रही हैं जिसमें कोई सच्चाई नही है। पोस्टमॉर्टम में मृत्यु का कारण गोली लगने से होना पाया गया है। इस घटना में एक व्यक्ति के अतिरिक्त अन्य किसी की मृत्यु नही हुई है। अतः सभी से अनुरोध है कि साम्प्रदायिक सौहार्द को बनाये रखने के लिए अफवाहों पर ध्यान न दें व भ्रामक सूचनाओं को प्रसारित न करें।

- सोशल मीडिया सेल, जनपद बहराइच

मुसलमानों की तरफ से गोलीबारी हुई जिसमें राम गोपाल मिश्रा की गोलियां लगने से मौत हो गयी। डी जे पर तेज आवाज में आपत्तिजनक गाने बजना, राम गोपाल मिश्रा का आवेश में आकर किसी मुस्लिम व्यक्ति के घर की छत पर चढ़ना, इस्लामी प्रतीक झंडे को गिराना,हिंसा के लिये भीड़ को उकसाना आदि सब कुछ गैर कानूनी तो जरूर है,परन्तु इनका जवाब गोलीबारी करना या किसी की हत्या कर देना हरगिज नहीं। यह हत्या भी उतनी ही निंदनीय है जितना कि भीड़ द्वारा धर्म विशेष के लोगों को हिंसा के लिये उकसाया जाना। परन्तु बहराइच की इस हिंसा के बाद जो नफरत पूर्ण भूमिका टी वी चैनल्स व इन के नफरती ऐंकर्स यहाँ तक कि इस विषय पर आयोजित परिचर्चा में भाग लेने वाले पक्षपाती पैनल्स द्वारा अदा की गयी उसे देखकर साफ अंदाजा लगाया जा सकता है कि स्वयं को मुख्य धारा का मीडिया बताने वाला यह नेटवर्क दरअसल देश में अमन शांति व सद्भाव का पैरोकार नहीं बल्कि देश को नफरत व हिंसा की आग में झोंकने के लिये दिन रात एक किये हुए है। सबसे बड़ा नफरती खेल इस गैर जिम्मेदार मीडिया व सोशल मीडिया द्वारा राम गोपाल मिश्रा की मौत के बाद आई पोस्टमार्टम रिपोर्ट को लेकर खेला गया जिससे कि जलती आग में और घी डाला जा सके और दंगों को पूरे प्रदेश व देश में फैलाया जा सके। विस्तृत पोस्टमार्टम रिपोर्ट में बताया गया है कि राम गोपाल के शरीर में कई छर्रे लगे जिससे अत्यधिक रक्तस्राव हुआ जिसके चलते उसकी मृत्यु हो गयी। परन्तु मीडिया चीखता चिल्लाता रहा कि मृतक राम गोपाल पर तलवारों से हमला किया गया,उसके नाखून खींचे गये,उसे करंट लगाया गया उसकी लाश के साथ बर्बरता की गयी,आदि। जाहिर है उत्तेजना पूर्ण माहौल में इसतरह की अफ़वाह भरी खबरें जलती आग में घी डालने का ही काम करेंगी। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद नफरती व्यवसाय में लगे कई पत्रकार सी एम ओ व पोस्टमार्टम करने वाले अन्य डॉक्टर्स से भी मिले तथा उनके मुंह से यह कहलवाने की कोशिश की कि क्या पैरों के नाखून खींचे गये ? क्या मृतक शरीर के साथ बर्बरता की गई ? परन्तु कोई भी डॉक्टर इन नफरती रिपोर्टर्स के झांसे में नहीं आया। और सब ने एक ही बात कही कि मृतक के शरीर में कई छर्रे लगे जिससे अत्यधिक रक्तस्राव हुआ जिसके चलते उसकी मृत्यु हो गयी। आखिरकार इन अफवाहों के बाद बहराइच पुलिस को स्वयं सामने आना पड़ा और पोस्टमार्टम रिपोर्ट की सच्चाई को अपने एक्स हैंडल से जारी करते हुये अफवाहों से दूर रहने व भ्रामक सूचनाओं को प्रसारित न करने की अपील करनी पड़ी। एक टीवी चैनल पर इसी विषय पर आधारित एक परिचर्चा में उत्तर प्रदेश के पूर्व ए डी जी पी विभूति नारायण राय जब अपने जीवन के लगभग चार दशक के आई पी एस के रूप में अपनी सेवा के अनुभव के अनुसार अपनी बात कह रहे थे उसी समय भाजपा का एक प्रवक्ता साफ तौर पर यह कहता सुनाई दिया कि मैं धर्मनिरपेक्ष नहीं हूँ बल्कि मैं केवल हिन्दू हूँ। उसके बाद उसने विभूति नारायण राय के प्रति भी अपशब्दों का इस्तेमाल किया जबकि वह प्रवक्ता शायद उम्र के मामले में राय साहब की उम्र से आधा भी नहीं होगा। स्वयं को सुप्रीम कोर्ट का वकील बताने वाला परिचर्चा का वही प्रतिभागी एक मुस्लिम राजनैतिक विश्लेषक को सरेआम मुल्ले, आतंकवादी कहकर व गंदी गालियां देकर बुला रहा था। अफवाह, साम्प्रदायिक तनाव व सनसनी फैलाने की गोया इन एंकर्स व प्रवक्ताओं को पूरी ट्रेनिंग हासिल है। वैसे भी कई राजनैतिक विश्लेषकों का मत है कि चूंकि उत्तर प्रदेश में अगले कुछ दिनों में 10 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव होने जा रहे हैं इसीलिये साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण के लिये ही कुंठाग्रस्त लोग अपने कटु विमर्श के द्वारा देश की फिजा खराब करने में जुटे हुए हैं।

प्रदेश कॉर्डिनेशन कमेटी की बैठक में प्रत्याशी चयन की प्रक्रिया पूरी

चमकता राजस्थान (अत्री कुमार दाधीच)

जयपुर, 21 अक्टूबर। आगामी 13 नवम्बर को प्रदेश में होने वाले 07 विधानसभा उपचुनाव में प्रत्याशी चयन एवं चुनावों की तैयारियों को लेकर प्रदेश कांग्रेस वॉर रूम में अखिल भारतीय कांग्रेस के राजस्थान प्रभारी सुखजिन्दर सिंह रंधावा की अध्यक्षता में प्रदेश कॉर्डिनेशन कमेटी की बैठक सम्पन्न हुई।बैठक में प्रदेशाध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा, नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली, पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, अखिल भारतीय कांग्रेस के महासचिव भंवर जितेन्द्र सिंह, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी. पी. जोशी, एआईसीसी के सचिव तथा सह प्रभारी चिरंजीव राव, रूत्विक मकवाना, श्रीमती पूनम पासवान, उप नेता प्रतिपक्ष रामकेश मीना, कांग्रेस विधायक

दल के मुख्य सचेतक रफीक खान शामिल हुए।

बैठक पश्चात मीडिया को सम्बोधित करते हुए प्रदेशाध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा ने कहा कि प्रदेश में होने वाले विधानसभा उप चुनावों में कांग्रेस पार्टी की तैयारी सभी सीटों पर चुनाव लड़ने की है तथा सातों स्थानों पर कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार विजयी रहेंगे। उन्होंने कहा कि बैठक में सातों विधानसभा क्षेत्रों में होने वाले उपचुनावों की तैयारियों हेतु व्यापक रणनीति तैयार कर प्रत्याशी चयन पर विस्तृत चर्चा की गई है। उन्होंने कहा कि उपचुनावों हेतु नियुक्त सीनियर ऑब्जर्वर, पदाधिकारियों तथा गठित चुनाव समिति के सदस्यों से प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर विधानसभा क्षेत्रों में प्रचार के लिए कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की मांग को लेकर भी चर्चा की गई।इसके साथ ही वरिष्ठ नेताओं के चुनाव अभियान हेतु व्यापक रणनीति तैयार की गई। उन्होंने कहा कि सातों सीटों पर कांग्रेस के संभावित प्रत्याशियों का पैनल तैयार कर लिया गया है तथा अखिल भारतीय कांग्रेस के प्रभारी सुखजिन्दर सिंह रंधावा द्वारा उक्त पैनल अखिल भारतीय कांग्रेस के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा जिस पर पार्टी आलाकमान द्वारा प्रत्याशी चयन का निर्णय कर उम्मीदवार घोषित करेगी । उन्होंने कहा कि पार्टी द्वारा सभी सातों विधानसभा क्षेत्रों में होने वाले उपचुनावों पर पार्टी का उम्मीदवार उतार कर चुनाव लड़ने की तैयारी की गई है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में उपचुनावों को लेकर गठबंधन का अंतिम निर्णय पार्टी आलाकमान द्वारा किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश में भाजपा के 10 माह के कुशासन के मुद्दें पर प्रदेश की जनता कांग्रेस पार्टी के पक्ष में मतदान कर पार्टी प्रत्याशियों को विजयी बनाएगी।

प्रभारी सुखजिन्दर सिंह रंधावा ने कहा कि प्रदेश में होने वाले आगामी विधानसभा उपचुनावों में सातों सीटों पर कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी विजयी रहेंगे। उन्होंने कहा कि बैठक में सभी सातों विधानसभा क्षेत्रों को लेकर विस्तृत चर्चा की गई है तथा चुनावों में कांग्रेस की विजय सुनिश्चित करने हेतु व्यापक रणनीति तैयार की गई है।

प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा ने विधानसभा उप चुनावों की तैयारी हेतु राजस्थान प्रदेश युवा कांग्रेस तथा कांग्रेस सेवादल के पदाधिकारियों की बैठक लेकर उपचुनावों में अग्रिम संगठन के नेताओं एवं कार्यकर्ताओं को कांग्रेस प्रत्याशियों के प्रचार-प्रसार हेतु कार्य करने के निर्देश दिए। बैठक में युवा कांग्रेस अध्यक्ष अभिमन्यु पूनियां, कार्यकारी अध्यक्ष यशवीर सूरा, सुधीन्द्र मूण्ड, कांग्रेस सेवादल के अध्यक्ष हेमसिंह शेखावत सहित अनेक पदाधिकारी मौजूद रहे। डोटासरा ने कहा कि सातों विधानसभा उपचुनावों में अग्रिम संगठन के पदाधिकारियों को क्षेत्र विशेष की जिम्मेदारी प्रदान की जाकर कांग्रेस प्रत्याशी के चुनाव अभियान में समन्वय के साथ पार्टी के लिए प्रचार-प्रसार करना चाहिए।

संक्षिप्त समाचार

पिंकसिटी प्रेस क्लब का 33वां स्थापना दिवस

- लाईट डेकोरेशन एवं गजल गायन से हुआ शुभारम्भ
- सेल्फी पाइंट एवं फोटो प्रदर्शनी रही आकर्षण का केन्द्र

चमकता राजस्थान। (अत्री कुमार दाधीच)जयपुर। पिंकसिटी प्रेस क्लब के 33वें स्थापना दिवस समारोह का सोमवार को ग्रेटर नगर निगम महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर ने लाईट डेकोरेशन का स्वीच ऑन कर शुभारम्भ किया। इस अवसर पर उन्होनें फोटो प्रदर्शनी का शुभारम्भ कर अवलोकन किया। महापौर ने प्रेस क्लब परिवार को स्थापना दिवस की शुभकामनाएं एवं बधाई दी।

क्लब अध्यक्ष डा. वीरेन्द्र सिंह राठौड़, महासचिव योगेन्द्र पंचौली, कोषाध्यक्ष गिरिराज गुर्जर एवं प्रबन्ध कार्यकारिणी ने मुख्य अतिथि डॉ. सौम्या गुर्जर को स्मृति चिन्ह एवं पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। क्लब सदस्यों ने सेल्फी पांइट पर सेल्फियां ली। इस अवसर पर उपाध्यक्ष विमल सिंह तंवर, राहुल भारद्वाज, कार्यकारिणी सदस्य पुष्पेन्द्र सिंह राजावत, अनिता शर्मा, ओमवीर भार्गव, सिद्धार्थ उपाधाय, संजय गौतम, शालिनी श्रीवास्तव, उमंग माथुर क्लब के पूर्व अध्यक्ष सत्य पारीक, किशोर शर्मा, नीरज मेहरा, राधारमण शर्मा सहित वरिष्ठ एवं युवा पत्रकार उपस्थित हुए। राजस्थानी कलाकारों ने गजल गायन से प्रेस क्लब परिसर को भाव विभोर कर दिया।

22 अक्टूबर को सायं 7 बजे सांस्कतिक कार्यक्रम एवं 23 अक्टूबर 2024 को प्रातः 10.30 बजे मुख्य समारोह आयोजित किया जाएगा। जिसमें पत्रकारों को लाईफ टाइम अचीवमेन्ट, बेस्ट प्रिण्ट एण्ड इलैक्ट्रॉनिक मीडिया रिपोर्टर, बेस्ट फोटोजर्नलिस्ट, बेस्ट कैमरामैन एवं विशेष पुरस्कारों से सम्मानित किया जाएगा

शराब ठेका से करीब एक लाख रुपए की शराब चोरी, पुलिस में मामला दर्ज

- दुकान में लगे सीसीटीवी में कैद चोरी की बारदात, तीन अज्ञात युवक ने दिया घटना को अंजाम

चमकता राजस्थान। भरतपुर,(राजवीर सिंह)। नदबई लखनपुर थाना क्षेत्र के गांव हन्तरा के सरकारी शराब ठेका से अज्ञात चोरों ने देर रात दूसरी बार करीब एक लाख रुपए की शराब चोरी करने की घटना को अंजाम दिया। खास बात है कि, दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरें में चोरी की बारदात कैद होने व पुलिस में मामला दर्ज होने के बावजूद पुलिस को अज्ञात चोरों का सुराग तक नही लग सका।

विभागीय सूत्रों की मानें तो देर रात हन्तरा निवासी जीतेन्द्र कुमार पुत्र घनश्याम सिंह अपने शराब ठेका को बंद कर अपने घर गया। इसी दौरान अज्ञात तीन युवक शराब ठेका का ताला तोड़ करीब एक लाख रुपए की शराब चोरी कर फरार हो गए। चोरी की बारदात दुकान में लगे सीसीटीवी में कैद हुई। जिसमें तीन युवकों ने सरिए से दुकान का ताला तोड़ा। बाद में दुकान में लगे सीसीटीवी को तोड़ते हुए करीब एक लाख रुपए की शराब लेकर फरार हो गए। गौरतलब है कि, करीब एक माह पहले भी शराब ठेका से करीब 50 हजार नगदी सहित शराब चोरी की बारदात हुई। जिसको लेकर पीडित ने पुलिस को सूचना दी। लेकिन, पुलिस अधिकारियों ने महज औपचारिक जांच पडताल कर इतिश्री कर लिया तो दूसरी ओर पुलिस की ओर से कार्रवाई नही होने के चलते ही अज्ञात चोरों ने बेखौफ होते हुए दूसरी बार चोरी की घटना को अंजाम दिया।

805 किलोमीटर दौड़ी अपना घर आश्रम बाड़ी एम्बुलेंस

- 7 दिन में रेस्क्यू किए गए 29 प्रभुजी, मिला अपना घर

चमकता राजस्थान। धौलपुर(रामदास तरुण)। बाड़ी अपना घर आश्रम बाड़ी की एम्बुलेंस दौड़ी, संस्था अपना घर आश्रम भरतपुर एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग राजस्थान सरकार के सहयोग से संचालित आश्रयहीन, असहाय,लावारिस प्रभु स्वरूप पीड़ित मुक्त राजस्थान अभियान के अंतर्गत धार्मिक, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशनों के निकट बेहद गंभीर स्थिति में पड़े एवं घूमते मिले असहाय लावारिस बीमार पीडितो को रेस्क्यू किया गया। कोई गंदगी के बीच बैठा था। तो कोई बड़बड़ाता हुआ घूम रहा था। अपना घर आश्रम के संरक्षक सुनील गर्ग कंपनी परिवार ने बताया कि इस विशेष रेस्क्यू अभियान के अंतर्गत अपना घर आश्रम बाड़ी की एंबुलेंस के द्वारा 805 किलोमीटर की दूरी तय कर धौलपुर शहर के विभिन्न जगह से 7 दिन में 29 प्रभु जी रेस्क्यू किए गए, जिन्हें सेवा उपचार , इलाज एवं पुनर्वास के लिए अपना घर आश्रम में प्रवेश दिया गया जहां उन्हें उपचार के साथ-साथ सभी जरूरी सुविधाए निः शुल्क उपलब्ध कराई जाएगी, अभियान की सफलता और प्रभुजनों की संख्या को देखते हुए यह सुबह 7:00 से लेकर शाम को 7:00 बजे तक किया गया ' अपना घर के आश्रम प्रभारी राजकुमार गर्ग ने बताया कि अब तक आश्रम में 300 प्रभु जिओ का प्रवेश, जिसमें से 87 पुनर्वासित, वर्तमान में आश्रम में 123 प्रभुजी निवास कर रहे हैं कनए प्रभुजियों की पुनर्वास की प्रक्रिया आरंभ कर दी गई है'।

जल्द स्थापित हों कुसुम के सोलर प्लांट : चेयरमैन डिस्कॉम्स

निर्धारित समयावधि में आवश्यक स्वीकृतियां जारी करने के लिए बनेगी एसओपी

चमकता राजस्थान

जयपुर, 21 अक्टूबर। डिस्कॉम्स चेयरमैन एवं जयपुर विद्युत वितरण निगम की प्रबंध निदेशक सुश्री आरती डोगरा ने कुसुम-सी योजना के तहत स्वीकृत सोलर पावर प्लांटों को शीघ्र स्थापित करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने जयपुर डिस्कॉम के अधिकारियों से कहा है कि अवॉर्ड जारी करने के बाद पावर परचेज एग्रीमेंट फाइनल करने, ट्रांसमिशन लाइन तथा मीटर लगाने सहित विभिन्न आवशयक स्वीकृतियों के काम निर्धारित समयावधि में पूरे किए जाएं। इसके लिए डिस्कॉम के स्तर पर एसओपी तैयार की जाएगी।

डिस्कॉम्स चेयरमैन जयपुर डिस्कॉम क्षेत्र में लगाए जा रहे इन प्लांटों की प्रगति की सोमवार को विद्युत भवन में समीक्षा कर रही थीं। उन्होंने किसानों, डवलपरों तथा निगम के अभियंताओं से प्लांट स्थापित करने की दिशा में अब तक की प्रगति तथा बाधाओं

के बारे में जानकारी ली। सुश्री डोगरा ने निर्देश दिए कि डिस्कॉम अभियंता प्रो-एक्टिव एप्रोच के साथ सोलर संयंत्रों की स्थापना में आ रही अन्य विभागों से संबंधित दिक्कतों को दूर करने में भी सहयोग करें।

डिस्कॉम चेयरमैन ने कहा कि कुसुम योजना का कंपोनेंट-सी किसानों को दिन में कृषि कार्य के लिए बिजली देने की दिशा में महत्वपूर्ण है। ऐसे में इन ग्रिड कनेक्टेड सोलर परियोजनाओं को शीघ्र स्थापित करना आवशयक है। बैठक में डवलपर्स तथा किसानों ने अवगत कराया कि उन्हें डिस्कॉम के स्तर पर आवशयक सहयोग मिल रहा है। उन्होंने अतिरिक्त प्रयास कर यथासंभव शीघ्र सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने के लिए आश्वस्त किया।

इस अवसर पर निदेशक (तकनीकी) एसएस नेहरा, मुख्य लेखा नियंत्रक ए.के. जोशी, अतिरिक्त मुख्य अभियंता (पीपीएम) आर. के.शर्मा सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

महिला टेनिस बॉल क्रिकेट चैंपियन टीम का अभिनंदन, खिलाड़ियों ने बढ़ाया जयपुर का मान : राजीव अरोड़ा

चमकता राजस्थान

जयपुर। हाल ही में संपन्न स्टेट टेनिस बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट में विजयी होकर जयपुर लौटी महिला चैंपियन टीम का आज जिला संघ पदाधिकारियो ने अभिनंदन किया। निजी होटल में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर टेनिस बॉल क्रिकेट संघ के संरक्षक राजीव अरोड़ा, अध्यक्ष आलोक गुप्ता,वरिष्ठ उपाध्यक्ष नितिन शारदा भगेरिया ने खिलाड़ियों को मेडल और प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया। राजीव अरोड़ा ने अपने बधाई संदेश में कार्यकारी

मंजूर बेग कोच भाटी और सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा खिलाड़ियों ने जयपुर को पुन चैंपियन बना कर जयपुर की गौरवशाली परंपरा को एक नया आयाम दिया है। गौरतलब है जयपुर टीम 2011 से 2019 तक लगातार चैंपियन रहती आई है और इस बार चार साल बाद चैंपियन बनी है। राजीव अरोड़ा ने टेनिस बॉल क्रिकेट की बेहतरी और नवाचार पर कार्य करने हेतु जिला संघ को निर्देश देते हुए सभी खिलाड़ियों के अनुशासन और कड़ी मेहनत की सराहना की। अभिनंदन कार्यक्रम में यूनिराज एलुमिनी फेडरेशन के के विक्रम रस्तोगी, अनिल गोयल, डॉ प्रतिभा शर्मा, संजय झांवर, युवा सीए पार्थ झांवर, बसंत जैन, विशाल तिवाड़ी ने भी खिलाड़ियों का उत्साह वर्धन किया।

धौलपुर पुलिस अधीक्षक सुमित मेहरड़ा,एडिशनल एसपी कमल कुमार जांगिड़ निर्देशन में की कार्यवाही

चमकता राजस्थान

धौलपुर से रामदास। तरुण की प्रमुख रिपोर्ट पुलिस कोतवाली बाड़ी द्वारा बाईपास पर की जा रही नाकाबंदी धौलपुर एस पी सुमित मेहरड़ा, एडिशनल एसपी कमल कुमार जांगिड़ के निर्देशन में बाड़ी थाना प्रभारी शिवलहरी मीणा के नेतृत्व में पुलिस टीम द्वारा नाकाबंदी की जा रही है। भगवानलाल रक, सियाराम रक, बृजेश कुमार, सुमन, हेमन्त, राजपाल द्वारा थींवीलर, टैम्पू, लोडिंग वाहन, विना नंबरी

मोटर साइकिल, टैक्टर, बस आदि की टश एक्ट में दो दर्जन से अधिक चालन किए, इसी प्रकार बस-ड़ी रोड, यातायात प्रभारी एवं मय टीम के द्वारा 15 वाहन जप्त किये और नौ वाहन जप्त किए, जितेंद्र सिंह हरसाना, बालवीर, कैलाश, बहादुर सिंह आदि टीम मौजूद रही!

भारत बोध करने वाले कार्यक्रमों का संस्कार भारती करेगी संपूर्ण देश में आयोजन

- अब कला साधकों को मिलेंगे समुचित अवसर

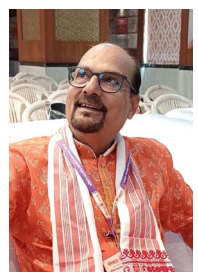

चमकता राजस्थान। जयपुर। अखिल भारतीय साधारण सभा के समापन पूर्व मानसरोवर में आयोजित प्रेस वार्ता में संस्कार भारती के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ रवींद्र भारती ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि 2025 का वर्ष देश के संविधान को अंगीकार करने का अमृत महोत्सव वर्ष है। देश का संविधान भारत के स्वाभिमान और गौरव को प्रकट करने वाली एक सशक्त संहिता है। इसलिए इस संविधान में भारत बोध कराने वाले विभिन्न पक्षों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों को आयोजित करके देश और समाज को उससे अवगत कराया जाएगा। पूरे देश में इस प्रकार के कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां 26 जनवरी 2025 से 26 जनवरी 2026 तक करने का आग्रह साधारण सभा की बैठक में किया गया है।

उन्होंने कहा कि कला जगत का संगठन होने के नाते संस्कार भारती विचार आधारित प्रस्तुतियों की दिशा में आगे बढ़ेगी और कलाकार के साथ कला जगत के अन्य घटकों में भी अपने कार्य तथा भारतीय विचार का विस्तार करेगी।

संस्कार भारती कला जगत में सभी के साथ मिलकर देश में भारतीय संस्कृति और भारतीय कला की समृद्धि के लिए कला अध्यापक, अध्येता, समीक्षक श्रोता,संस्था चालकों,नीति निर्धारकों से संपर्क और संवाद करेगी। डॉ भारती ने कहा कि ऐसे कलाकार जो मानते हों कि कला केवल कला के लिए नहीं है,और कला केवल मनोरंजन के लिए भी नहीं है अपितु स्वान्तः सुखाय होने के साथ-साथ लोक हिताय, बहुजन हिताय है, समाज में संस्कार का निर्माण करने का एक सशक्त माध्यम है, ऐसे कला साधकों को प्रगति के समुचित अवसर दिलाने और उनकी कला के विकास में सहयोग करने का संस्कार भारती प्रयास करेगी।

दो दिन पहले घर से लापता युवक का अखैगढ़ की पोखर में मिला शव

चमकता राजस्थान। भरतपुर (राजवीर सिंह)। नदबई क्षेत्र के गांव अखैगढ़ में सोमवार सुबह पोखर में युवक का शव तैरता मिलने से ग्रामीणों में हड़कंप मच गया। ग्रामीणों की सूचना पर पुलिस ने मौके पर जांच पडताल कर शव को पोखर से निकाला। बाद में शव की शिनाक्त होने पर पुलिस ने उपजिला चिकित्सालय में शव का पोस्टमार्टम कराया। विभागीय सूत्रों की मानें तो गांव अखैगढ़ निवासी रामअवतार जाटव पुत्र सामंता जाटव, विगत दो दिन पहले शराब के नशे में घर से लापता हो गया। बाद में सोमवार सुबह खेत पर कार्य करने जा रहे लोगों को पोखर में युवक का शव तैरता मिला। ग्रामीणों की सूचना पर पुलिस ने मौके पर जांच पडताल कर शव को पोखर से निकाला। बाद में पुलिस ने उपजिला चिकित्सालय में शव का पोस्टमार्टम कराया।

रोहित उपाध्याय भाजपा मंडल संयोजक नियुक्त

चमकता राजस्थान। नदबई,(राजवीर सिंह)। भाजपा जिलाध्यक्ष ने कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए नदबई कस्बा निवासी रोहित उपाध्याय को मंडल संयोजक नियुक्त किया। रोहित उपाध्याय वर्तमान में भाजपा आईटी सेल संभाग प्रभारी पद पर कार्यरत है। उधर, रोहित को मंडल संयोजक नियुक्त होने पर पार्टी कार्यकर्ताओं ने माला व साफा पहनाकर अभिनंदन किया। वही, नवनियुक्त मंडल संयोजक ने पार्टी के प्रति वफादार रहते हुए कार्यकर्ताओं को अनुशासन का पाठ पढ़ाया।

» सोमवार को पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से अमरीकी राजदूत एरिक मार्केल गार्सेटी ने सरकारी निवास पर मुलाकात की ! चमकता राजस्थान, जयपुर।

शहीद पुलिस कार्मिकों के सम्मान में गार्ड ऑफ ऑनर, डीजीपी ने ली परेड की सलामी

पुलिस शहीद दिवस पर जयपुर में राज्य स्तरीय कार्यक्रम

शहीदों के बलिदान से प्रेरणा लेकर देश की सेवा का संकल्प लें: पुलिस महानिदेशक

चमकता राजस्थान

जयपुर (खलील कुरैशी) 21 अक्टूबर। पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) उत्कल रंजन साहू ने कहा कि देश के अमर शहीद पुलिस कार्मिकों के बलिदान से प्रेरणा लेकर सभी पुलिस अधिकारी और पुलिस कर्मी अपने कर्त्तव्य का ईमानदारी से पालन करते हुए देश की सेवा का संकल्प लें। ये बात साहू ने सोमवार को पुलिस शहीद दिवस के अवसर पर जयपुर में राजस्थान पुलिस अकादमी (आरपीए) में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम के अवसर पर कहीं।

त्रिमूर्ति सर्किल स्थित 'शहीद स्मारक' पर भी हुआ श्रद्धांजलि कार्यक्रम

● राष्ट्र सेवा में शहीद देश के 216 पुलिस कार्मिकों का पुण्य स्मरण

पुलिस महानिदेशक साहू ने श्रद्धांजलि कार्यक्रम में पूरे भारत में एक सितम्बर 2023 से 31 अगस्त 20224 की अवधि में राष्ट्र सेवा में वीरगति प्राप्त करने वाले 216 पुलिस अधिकारियों और कार्मिकों के नाम वाचन करते हुए राजस्थान पुलिस परिवार की ओर से उन्हें भावांजलि अर्पित की। उन्होंने राजस्थान के शहीद पुलिस कर्मियों एएसआई रामचंद्र, एएसआई राम स्वरूप, हैड कास्टेबल चंदा कुमारी, हैड कांस्टेबल खुशीराम राजलवाल, हैड कांस्टेबल लहर चंद, हैड कांस्टेबल शीशराम, हैड कांस्टेबल सुखराम, हैड कांस्टेबल उमराव सिंह, हैड कांस्टेबल विनोद कुमार, कांस्टेबल भंवर लाल, कांस्टेबल धारा सिंह मीना, कांस्टेबल कुम्भाराम, कांस्टेबल महेन्द्र राम, कांस्टेबल महिपाल, कांस्टेबल निरंजन सिंह, कांस्टेबल प्रवीण चंद्र, कांस्टेबल सत्येन्द्र सिंह, कांस्टेबल सुखराम, कांस्टेबल सुरेश मीना एवं कांस्टेबल थानाराम सहित देश के अन्य राज्यों के साथ बीएसएफ, सीआईएसएफ, सीआरपीएफ, आईटीबीपी, एसएसबी, फायर सर्विसेज–होमगार्ड्स तथा आरपीएफ के जवानों का स्मरण करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

लद्दाख में 65 वर्ष पहले पुलिस जवानों के बलिदान को किया नमन

पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) उत्कल रंजन साहू ने अपने उद्बोधन में कहा कि 65 वर्ष पहले 21 अक्टूबर 1959 के दिन लद्दाख के दुर्गम क्षेत्र में भारतीय पुलिस के जवानों ने मातृभूमि की रक्षा करते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। इन अमर जवानों की शहादत को याद करने और उनसे प्रेरणा ग्रहण करने के लिए पूरे देश में हर पुलिस संगठन और संस्थान में प्रत्येक वर्ष 21 अक्टूबर को पुलिस शहीद दिवस मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि पुलिस के इन वीर जवानों का बलिदान भारतीय पुलिस के कार्यों की उच्चतम परम्पराओं का प्रतीक है, जो देशभर में पुलिस जवानों के समक्ष कर्त्तव्यनिष्ठा का अनुपम और अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करता है। डीजीपी ने ली परेड की सलामी श्रद्धांजलि कार्यक्रम में शहीद पुलिस कार्मिकों के सम्मान में गार्ड ऑफ ऑनर हुआ, परेड में डीजीपी श्री साहू ने सलामी लीं। पुलिस महानिदेशक साहू एवं पूर्व डीजीपी अजीत सिंह ने आरपीए में शहीद स्मारक पर पुष्प चक्र अर्पित कर शहीद पुलिस कर्मियों को श्रद्धांजलि दी। शहीद स्मारक पर रिटायर्ड डीजीपी ओपी गल्होत्रा एवं एसपीएस श्रीवास्तव, एडीजी (ट्रेनिंग) अशोक राठौड़, आईबी के ज्वॉइंट डायरेक्टर रमाकांत शर्मा, सीबीआई के डीआईजी अशोक कुमार, एडीजी एवं आरपीए के निदेशक श्री एस. सेंगाथिर, जयपुर के एडिश्नल पुलिस कमिश्नर कुंअर राष्ट्रदीप सिंह एवं रिटायर्ड एएसआई पृथ्वी सिंह सहित पुलिस अधिकारियों और पुलिसकर्मियों ने भी श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस अवसर पर डीजीपी (एसीबी) रवि प्रकाश मेहरड़ा, डीजीपी (साइबर अपराध एवं एससीआरबी) हेमंत प्रियदर्शी के अलावा एडीजी, आईजी एवं डीआईजी स्तर के वरिष्ठ अधिकारियों सहित आईपीएस, आरपीएस एवं अन्य पुलिस अधिकारी, पुलिसकर्मी और गणमान्य जन मौजूद रहे।
आरपीए में कार्यक्रम के बाद जवाहरलाल नेहरू मार्ग पर त्रिमूर्ति सर्किल स्थित पुलिस स्मारक पर भी श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। जहां डीजीपी श्री यू आर साहू ने पुलिस शहीद स्मारक पर पुष्प चक्र अर्पित कर पुलिस के अमर शहीदों को श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस दौरान पुलिस कमिश्नरेट जयपुर के पुलिस अधिकारियों सहित अन्य पुलिस अधिकारियो और पुलिसकर्मियों ने भी शहीद पुलिस कार्मिकों को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

संक्षिप्त समाचार

जयपुर, उदयपुर समेत 12 शहरों में 'एजोर्ट' स्टोर्स का विस्तार, फॉल फेस्टिव कलेक्शन लॉन्च

● रिलायंस रिटेल के प्रीमियम फैशन ब्रांड की नई पेशकश

चमकता राजस्थान। मुंबई। रिलायंस रिटेल के प्रीमियम फैशन और लाइफस्टाइल ब्रांड 'एजोर्ट' ने अपने फॉल फेस्टिव कैंपेन की शुरुआत की है। लंदन की खूबसूरत पृष्ठभूमि में शूट किए गए इस कलेक्शन में आधुनिक फैशन और स्टाइल का अनोखा मिश्रण है। ब्रांड ने विस्तार योजना के तहत जयपुर, उदयपुर, रायपुर, देहरादून, गोरखपुर, रांची और बेंगलुरु में दो नए स्टोर सहित कुल 12 नए स्टोर खोले हैं। एजोर्ट का लक्ष्य प्रीमियम अंतरराष्ट्रीय और समकालीन भारतीय फैशन के लिए एक नए स्तर का शॉपिंग अनुभव प्रदान करना है। ब्रांड का कलेक्शन पुरुषों, महिलाओं, बच्चों और युवाओं के लिए ग्लोबल ट्रेंड्स और आधुनिक भारतीय शैलियों का क्यूरेटेड चयन पेश करता है।

एजोर्ट के प्रेजिडेंट और सीईओ अखिलेश प्रसाद ने कहा, ₹हम इस विस्तार से बेहद उत्साहित है। इससे हमें नए शहरों और ग्राहकों तक पहुंचने का अवसर मिलेगा। हमारा उद्देश्य ग्राहकों को उनकी आकांक्षाओं और जीवनशैली के अनुरूप एक उत्कृष्ट फैशन अनुभव देना है।₹ एजोर्ट के नए स्टोर्स में स्मार्ट ट्रायल रूम्स, फैशन डिस्कवरी स्टेशन और सेल्फ-चेकआउट जैसी अत्याधुनिक सुविधाएं मौजूद है।

बिहार के राज्यपाल ने की राज्यपाल बागडे से शिष्टाचार भेंट

चमकता राजस्थान। जयपुर।(खलील कुरैशी) 21 अक्टूबर। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे से राजभवन में सोमवार को बिहार के राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने मुलाकात की। उनकी यह शिष्टाचार भेंट थी।इस दौरान राज्यपाल बागडे ने उनका अभिनंदन करते हुए राजस्थान की यात्रा की याद स्वरूप स्मृति चिन्ह प्रदान कर राजभवन में उनका स्वागत किया।

राइजिंग राजस्थान: उद्योगो की आएगी बहार बढ़ेगा निवेश, खुलेंगे समृद्धि के द्वार

5 हजार 750 करोड़ रुपए के 95 एमओयू प्रस्तावित

चमकता राजस्थान

कोटपूतली-बहरोड़,(धर्मेंद्र बंसल)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान को हर क्षेत्र में अग्रणी राज्य बनाने के लिए कटिबद्ध है। राइजिंग राजस्थान में कोटपूतली-बहरोड़ जिले में उद्योगों की बहार आने वाली है। बड़ी संख्या में निवेशक यहां उद्योग स्थापित करने के लिए रूचि दिखा रहे है। मुख्यमंत्री शर्मा की मंशानुरूप 'राइजिंग राजस्थान' ग्लोबल इन्वेस्टमेंट सम्मिट-2024 के माध्यम से प्रदेश में औद्योगिक समृद्धि के द्वार खुलेंगे। प्रदेश में निवेश को बढ़ावा देने के लिए निजी क्षेत्रों के निवेशकों को आमंत्रित किया जा रहा है। इसी के साथ निवेशकों के साथ विभिन्न क्षेत्रों में निवेश के लिए एमओयू किए जा रहे हैं।

● औद्योगिक विकास होने से युवाओं को मिलेगा रोजगार :

युवाओं को राजकीय विभागों के साथ निजी क्षेत्रों में रोजगार व स्वरोजगार के लिए अवसर उपलब्ध करवाने के लिए प्रदेश की भजनलाल

सरकार संवेदनशील है। 'राइजिंग राजस्थान' इन्वेस्टर मीट के माध्यम से प्रदेश सरकार औद्योगिक संघ के प्रतिनिधियों, उद्योगपतियों व निवेशकों को फैसिलिटेट कर औद्योगिक संभावनाओं पर निरंतर प्रगतिरत है। इन्वेस्टमेंट सम्मिट के माध्यम से औद्योगिक विकास की अपार संभावनाओं के साथ प्रदेश के युवाओं के लिए रोजगार के बेहतरीन अवसर मिलेंगे। इन्वेस्टमेंट सम्मिट में ऊर्जा, स्वास्थ्य कृषि, पर्यटन, शिक्षा, विनिर्माण सहित सेवा प्रदाता विभागों के माध्यम से निवेशकों को आमंत्रित किया जा रहा है।मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा की मंशा है कि क्षेत्रीय निवेश को बढ़ावा मिले ताकि प्रादेशिक विकास की गति तीव्र हो और राजस्थान प्रदेश हर क्षेत्र में अग्रणी बने। क्षेत्रीय निवेश को बढ़ावा देने के लिए प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों पर जिला स्तरीय इन्वेस्टर मीट का आयोजन किया जा रहा है।जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल शर्मा के निर्देशन में नीमराना के होटल लाल विलास पर 25 अक्टूबर को प्रातः 11:00 बजे से जिला स्तरीय राइजिंग राजस्थान इन्वेस्टर मीट आयोजित किया जाएगा। जिले में राइजिंग राजस्थान इन्वेस्टर मीट में उद्योगपतियों व निवेशकों की अधिकाधिक भागीदारी सुनिश्चित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। जिले में अभी तक 5 हजार 7 सौ 50 करोड़ रुपए के 95 एमओयू प्रस्तावित किए गए हैं।

ग्रामीण विकास स्थायी समिति की बैठक का हुआ आयोजन

● जिला परिषद सभागार में हुआ बैठक का आयोजन

● जिला प्रमुख श्रीमती रमा देवी चोपड़ा ने की बैठक की अध्यक्षता

● विकास कार्यों के पर्यवेक्षण एवं समीक्षा पर हुई चर्चा

चमकता राजस्थान। जयपुर (खलील कुरैशी) (खलील कुरैशी) 21 अक्टूबर। जिला परिषद सभागार में सोमवार को ग्रामीण विकास स्थायी समिति की बैठक का आयोजन हुआ। जिला प्रमुख रमा देवी चोपड़ा की अध्यक्षता में आयोजित हुई बैठक में विकास कार्यों के पर्यवेक्षण एवं समीक्षा पर चर्चा हुई।बैठक में ग्रामीण सड़कों के गुणवत्तापूर्ण निमार्ण एवं मरम्मत, जल संग्रहण विकास कार्यों की प्रगति, स्वच्छ भारत मिशन, राजीव गांधी जल संचय योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना सहित ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग की सभी लोक कल्याकारी योजनाओं की कार्यप्रगति की समीक्षा हुई।बैठक में ग्रामीण विकास स्थायी समिति के सदस्य, जिला परिषद की मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रतिभा वर्मा, अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी शेर सिंह लुहाड़िया, ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग, कृषि विभाग, सार्वजनिक निमार्ण विभाग, जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग, पशुपालन विभाग, महिला बाल विकास विभाग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग सहित अन्य संबंधित विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा हटवाने के लिए पार्षद रलावता ने किया सत्याग्रह

चमकता राजस्थान

जयपुर/अजमेर (खलील कुरैशी) । नगर निगम अजमेर के पूर्व उपयुक्त एवं वार्ड 72 के पार्षद गजेंद्र सिंह रलावता ने आज वार्ड 72 में सरकारी भूमि पर अवैध अतिक्रमण को हटाने की मांग को लेकर गांधी भवन पर सत्याग्रह कर धरना प्रदर्शन किया !पार्षद रलावता ने बताया कि वार्ड नंबर 72 के खसरा संख्या 2647 नगर सुधार न्यास अजमेर के नाम पर अंकित आम रास्ता है । इस सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा तुरंत प्रभाव से हटाने के लिए बार-बार मांग करने के बावजूद नगर निगम अजमेर एवं अजमेर विकास प्राधिकरण द्वारा कोई कार्यवाही नहीं किए जाने के विरोध में आज सत्याग्रह किया गया !पार्षद रलावता ने बताया कि भूमाफिया ने जाली दस्तावेज प्रस्तुत कर निगम से मानचित्र स्वीकृत कराया था । निगम प्रशासन को फर्जी

दस्तावेज की जानकारी होने पर मानचित्र निरस्त कर दिया गया परंतु निगम प्रशासन ने अभी तक भू माफियाओं के खिलाफ एफआईआर दर्ज नहीं कराई गई है।पार्षद रलावता ने सरकारी भूमि पर अवैध अतिक्रमण हटाने ,भू माफिया के खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाने, नक्शानवीस का रजिस्ट्रेशन कैंसिल करने, राजस्थान नगर पालिका अधिनियम 2009 की धारा 52 की बिंदु संख्या 3 के अंतर्गत पार्षदों को शक्ति प्रदान करने एवं नगर निगम क्षेत्र में आवासीय नक्शो को समयबदअवधि में स्वीकृत करने ,पार्षदों के पत्रों के तय समय मे जवाब देने एवं आगामी दिवाली त्योहार पर वार्डों में पर्याप्त स्ट्रीट लाइट लगवाने की मांग की नगर निगम अजमेर वार्ड 72 के पार्षद रलावता ने आज प्रातः 10:00 बजे गांधीवादी तरीके से गांधी भवन पर सत्याग्रह कर धरना प्रदर्शन किया । सत्याग्रह की समापन पर राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व सचिव एवं अजमेर उत्तर विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के प्रत्याशी महेंद्र सिंह रलावता ने भू माफिया के खिलाफ उच्च स्तरीय कार्रवाई करवाने का आश्वासन देने के बाद सत्याग्रह समाप्त किया गया है।
पार्षद रलावता के सत्याग्रह धरना प्रदर्शन में अजमेर शहर जिला कांग्रेस कमेटी के निवर्तमान अध्यक्ष विजय जैन राज नारायण असोपा, शिवकुमार बंसल, हामिद खान चीता, अहमद हुसैन, परवेज खान,श्याम प्रजापति ,नरेश सत्यवाना,राजा चिश्ती ,हितेश्वरी टाक ,चंचल बेरवाल ,निर्मल बेरवाल ,वाहिद मोहम्मद ,अनीता चौरसिया, मोहम्मद दिलशाद, नरेंद्र तुनवाल, मोहम्मद शाकिर, गीता लखन ,आजाद लखन ,सुनील धानका ,नकुल खंडेलवाल ,बीना टॉक ,चंद्रशेखर बालोटिया ,पिंकी बालोटिया ,शक्ति सिंह रलावता, रवि शर्मा ,कपिल सारस्वत, भंवर कंवर राठौड़, मोहम्मद राशिद, वसीम खान, चंद्र प्रकाश शर्मा नरेंद्र सिंह शेखावत राजेन्द्र नरचल ,राजेंद्र वर्मा ,राजवीर सिंह, गणेश चौहान, अकबर हुसैन, शाहबाज खान ,ऋषि घारु, पप्पू कुरैशी ,योगेश जाटोलिया ,हेमेंद्र सिंह मऊ , संपत कोठारी ,मानक चंद, अमीरुद्दीन कुरैशी ,अकरम खान, सतीश कुमार वर्मा, पहलाद माथुर ,विजय सिंह रावत, पुष्पेंद्र ओझा, धर्मेंद्र नागवाल ,मुकेश जैदिया, सूरज सिंह हरियाला, विक्की चरनाल ,अशोक गोयल, कृष्ण कुमार दीक्षित ,जैराई रोनी, चेतन पवार, मनीष जैन, सोहनलाल सांवरिया ,राम गोपाल लखन, प्रमोद भाटी, रियाज शेख ,तौसीफ खान राजकुमार गर्ग, शंकर सिंह शेखावत, श्याम सुंदर शर्मा, दुर्गा सिंह राठौड़, नासिर कुरेशी, मोहम्मद आजाद, रामचंद्र बीजावत ,नदीम अहमद, इफ्तार कुरैशी, अलादीन ,आनंद सिंह पवार ,सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे।

जयपुर विकास आयुक्त आनन्दी ने किया जेडीए जोन–9,10 एवं रिंग रोड पीएपी क्षेत्र का निरीक्षण, दिये आवश्यक दिशा-निर्देश

चमकता राजस्थान

जयपुर! (खलील कुरैशी) 21 अक्टूबर। नगरीय विकास, स्वायत्त शासन एवं आवासन मंत्री झाबर सिंह खर्रा के मार्गदर्शन में जयपुर विकास आयुक्त आनंदी द्वा-रा सोमवार को जोन-9, 10 औररिंगरोडपीएपीक्षेत्रकानिरीक्षणकियादौर मेंनिदेशकअभियांत्रिकी-प्रथम एवं द्वितीय, उपायुक्त जोन-10 सहित संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे। इस दौरान उन्होंने बालाजी तिराहे पर चल रहे जंक्शन के कार्यों और बालाजी तिराहे से जगतपुरा आरओबी तक सड़क सुधार कार्य को राइजिंग राजस्थान समिट से पहले पूरा करने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।बालाजी तिराहे पर चल रहे जंक्शन सुधार कार्य एवं बालाजी तिराहे सेजगतपुराआरओ७ ीतकसड़कसुधारीकरण व मिडियन के कार्यो को राइजिंग राजस्थान समिट से पूर्व पूर्ण कराने के निर्देश दिये। महल रोड़ के मिडियन में साफ-सफाई पेड़ों की छटाई तथा रेलिंग आदि को ठीक करने के लिए वनसंरक्षक प्रकोष्ठ को निर्देश दिये गये।इसके साथ ही महल रोड़ पर मिसिंग लिंक सर्विस रोड़ के पार्ट

को पूर्ण करने हेतु इसमें आ रही अड़चनों का पूर्ण परीक्षण कर पूर्ण सर्विस रोड़ को कराने के व जोन-9 में महल रोड़ 7 नं. बस स्टेण्ड से सी.बी.आई फाटक सड़क में आ रहे है अतिक्रमण को चिन्हित करते हुए सड़क निर्माण कार्य को समयबद्ध कराये जाने हेतु रूपरेखा तैयार कर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिये।

जोन-10 में जगतपुरा आरओबी से सी.बी.आई फाटक तक मास्टर प्लान/जोनल प्लान के अनुरूप प्रस्तावित सड़क निर्माण हेतु रेलवे से आवश्यक भूमि लेने की प्रक्रिया शीघ्र प्रारम्भ करने व सड़क सीमा में आ रहेअतिक्रमण को चिन्हित करते हुए हटाये जाने जोन-10 में प्रस्तावित फार्म हाऊस योजना में अतिक्रमणों के चिन्हित कर शीघ्र हटाने एवं फार्म हाऊस योजना की शेष बची सड़को के निर्माण कार्य को पूर्ण करने के निर्देश दिये। जोन-10 में गोविन्दपुरा रोपाडा व खौरी रोपाडा आवासीय योजनाओं में सिविल कार्य कराये जाने व गोविन्दपुरा रोपाडा आवासीय योजना की सम्पर्क सड़क हेतु भूमि आवाप्ति प्रक्रिया शीघ्र प्रारम्भ कर सम्पर्क सड़क बनाये जाने हेतु उपायुक्त एवं अभियांत्रिकी शाखा को निर्देश दिये। रिंग रोड़ पीएपी क्षेत्र में 200 मीटर मिसिंग लिंक में क्षेत्रीय यातायात सुगम एवं सुचारू संचालन के लिए सड़क निर्माण के लिए रिंग रोड़ से सम्बन्धित अधिकारियों से वार्ता की गई एवं क्षेत्रीय यातायात के आवागमन हेतु सड़क भाग को निरन्तर चालू रखे जाने के लिए मौके पर उपस्थित जविप्रा अभियांत्रिकी अभियंताओं एवं रिंग रोड़ से सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिये। जेडीसी ने आगरा रोड़ पर बन रहे क्लोवर लिफ पर पीएपी क्षेत्र व आस-पास की आबादी सुगम यातायात हेतु सर्विस रोड़ बनाये जाने की सम्भावना के लिए एनएचएआई के अधिकारियों के साथ मौका निरीक्षण किया तथा इस हेतु वैकल्पिक रास्ता तलाशने के साथ-2 आगरा रोड़ से पीएपी क्षेत्र को सम्पर्क सड़क हेतु सर्विस सड़क उपलब्ध कराये जाने के निर्देश दिये।

संक्षिप्त खबरें

मुख्यमंत्री ने आतंकी हमले में बिहार के तीन श्रमिकों की मौत पर जताई शोक संवेदना

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जम्मू-कश्मीर के गांदरबल में हुए आंतकी हमले में बिहार के तीन श्रमिकों की मौत पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने कहा है कि यह घटना अत्यंत दुखद है और मैं इस घटना से मर्माहत हूँ। मुख्यमंत्री ने इस आतंकी हमले में तीनों मृतकों के निकटतम आश्रितों को मुख्यमंत्री राहत कोष से 02-02 लाख रुपये देने की घोषणा की है। साथ ही श्रम संसाधन विभाग एवं समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित योजनाओं से नियमानुसार अन्य लाभ दिलाने का अधिकारियों को निर्देश दिया है। साथ ही मुख्यमंत्री ने मृतकों के परिजनों को दुःख की इस घड़ी में धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है। मुख्यमंत्री ने स्थानिक आयुक्त, नई दिल्ली को निर्देश दिया है कि जम्मू-कश्मीर सरकार से समन्वय स्थापित कर मृतकों के पार्थिव शरीर को बिहार लाने की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करें।

छठ को लेकर जोगबनी से मनिहारी तक ट्रेन विस्तार की मांग

अररिया । फारबिसगंज के हॉस्पिटल रोड स्थित एक सभागार में सोमवार को नागरिक संघर्ष समिति के अध्यक्ष शाहजहां शाद की अध्यक्षता में बैठक हुई।बैठक में छठ पर्व को लेकर गंगा स्नान के लिए एक स्पेशल ट्रेन जोगबनी से मनिहारी तक चलाने साथ ही फारबिसगंज में जाम की समस्या को लेकर अनुमंडल पदाधिकारी से मिलने का निर्णय लिया गया। फारबिसगंज शहर में रेल परिचालन के कारण लगने वाले जाम समस्या से निदान पाने के लिए फारबिसगंज शहर के पटेल चौक स्थित केजे 63 के पास यू शेप में एक अंडरपास का निर्माण, पुराने केजे 64 के स्थान पर लाइट रैंप का यू शेप में निर्माण और वर्तमान केजे 64 को चौड़ा किया जाने जैसे मुद्दों को लेकर चर्चा की गई। इन समस्याओं को लेकर नागरिक संघर्ष समिति द्वारा आगामी 14 नवंबर गुरुवार को सांकेतिक धरना देने का निर्णय लिया गया।

सियालदह स्टेशन पर चलती ट्रेन में युवती से बदसलूकी, प्रेमी पर हमला

कोलकाता। सियालदह जाने वाली ट्रेन में सवार एक युवती का ट्रेन में उत्पीडन किया गया है। उसके पुरुष साथी पर भी हमला हुआ है। इसे लेकर स्टेशन पर जमकर हंगामा हुआ है। हमला करने वालों को गिरफ्तार कर लिया गया है। सोमवार को पूर्व रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी कौशिक मित्र ने इस बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पीड़ित जोड़ा रविवार देर रात ट्रेन में सवार हुए थे। दोनों को बैठने की जगह मिल गई थी और युवती अपने प्रेमी के कंधे पर सिर रखकर बैठी थी। तभी कुछ महिला सहयात्रियों ने इसका विरोध किया। इसके बाद पार्क सर्कस स्टेशन से तीन युवक ट्रेन में चढ़े और युवती की शारीरिक संरचना को लेकर अभद्र बातें करने लगे। युवती ने इसका विरोध किया, जिसके बाद जब ट्रेन सियालदह स्टेशन पहुंची तो युवक प्लेटफार्म पर उतर गए। युवती ने युवकों का पीछा करते हुए उन्हें थप्पड़ मार दिया। इसके जवाब में युवकों ने युवती के प्रेमी पर हमला कर दिया और उसे बुरी तरह पीटा। युवती का आरोप है कि घटना के समय प्लेटफार्म पर मौजूद जीआरपी अधिकारियों ने कोई कार्रवाई नहीं की। जब युवती ने इसका विरोध किया, तो जीआरपी अधिकारी ने उसे भी गिरफ्तार करने की धमकी दी। हालांकि, अंततः तीनों युवकों को गिरफ्तार कर लिया गया।

अररिया पहुंची केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह की हिंदू स्वाभिमान यात्रा

अररिया। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह की हिंदू स्वाभिमान यात्रा सीमांचल के अररिया पहुंची. वही, वे सोमवार को मां खड्गेश्वरी महाकाली मंदिर में की पूजा अर्चना की उनके साथ स्वामी दीपांकर भी थे। वही, नगर में विशाल जुलूस भी निकाली गई जिसमे गिरिराज सिंह , स्वामी दीपांकर, अररिया सांसद, फारबिसगंज विधायक एवं सैकड़ों की संख्या में महिला पुरुष शामिल थे। इस दौरान वे अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि ये यात्रा किसी के खिलाफ नहीं निकाली जा रही है, बल्कि इसके जरिए हिंदुओं को जगाने की कोशिश की जा रही है. गिरिराज सिंह के मुताबिक, इस यात्रा के जरिए वो किसी का विरोध नहीं करना चाहते, बल्कि हिंदुओं को जगाना चाहते हैं अपने भाषण में उन्होंने हिंदुओं के एकजुट रहने की भी बात कही, वही, गिरिराज सिंह ने इशारों ही इशारों में पप्पू यादव पर जमकर हमला बोला है. ऐसे में अररिया में गिरिराज सिंह ने सांसद पप्पू यादव का बिना नाम लिए हुए तंज कसते हुए कहा कि लोग कह रहे हैं कि मेरे लाश से गुजरना होगा. गिरिराज सिंह ने कहा कि मैं लाश पर नहीं बल्कि जिंदा लोगों की छाती होकर हिन्दू स्वाभिमान यात्रा पर निकला हूं।

प्रेस क्लब में सौ से अधिक पत्रकारों को मिलेगा निशुल्क एक्सीडेंटल इंश्योरेंस का लाभ

कोलकाता । प्रगतिशील राष्ट्रवादी पत्रकार संघ और इंडियन ओवरसीज बैंक के संयुक्त प्रयास से कोलकाता प्रेस क्लब में एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सौ से अधिक पत्रकारों को निशुल्क एक्सीडेंटल इंश्योरेंस प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में यूट्यूब पत्रकारिता से जुड़े लोग, फ्रीलांस पत्रकार और मुख्यधारा की मीडिया के पत्रकार शामिल थे। इसके साथ ही इंडियन ओवरसीज बैंक में उनके खाते भी खोले गए। कार्यक्रम के दौरान प्रगतिशील राष्ट्रवादी पत्रकार संघ के सचिव नरेश श्रीवास्तव ने बताया कि इस पहल का मुख्य उद्देश्य पश्चिम बंगाल के पत्रकारों की सुरक्षा और बेहतरी सुनिश्चित करना है।

नेशनल हेपकिडो में चित्तौड़ का दबदबा, एकांश सहित चार का ईरान के लिए चयन

एकांश आगनानी ने जिले में सबसे कम उम्र में फास्ट किकिंग में नेशनल गोल्ड मेडल जीत चित्तौड़गढ़ का बढ़ाया मान!

- **हितांश, कृतिका, पीयूष व एकांश का ईरान अंतरराष्ट्रीय हेपकिडो चैंपियशिप के लिए चयन**

चमकता राजस्थान

चित्तौड़गढ़ (बाबू अग्नानी)। चित्तौड़गढ़ हेपकिडो फेडरेशन ऑफ इंडिया की और से 8वीं हेपकिडो नेशनल चैंपियनशिप का आयोजन नई दिल्ली में 19 व 20 अक्टूबर को हुआ। इसमें राष्ट्रीय स्तर पर चित्तौड़गढ़ के खिलाड़ियों ने बेहतर प्रदर्शन किया है। इसमें राजस्थान से कुल 40 खिलाड़ियों ने भाग लिया था। चित्तौड़गढ़ के प्रतापनगर निवासी एकांश अगनानी सहित चार का ईरान में होने वाली अंतराष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए चयन हुआ है। एकांश अगनानी इस प्रतियोगिता में सबसे कम उम्र में गोल्ड मेडल जीतने वाले खिलाड़ी बने हैं। हेपकिडो नेशनल में राजस्थान ओवरऑल सेकंड रनर-अप बना है। इस प्रतियोगिता में देश भर से लगभग 1000 से अधिक खिलाड़ी भाग लेने के लिए पहुंचे थे। राजस्थान संघ अध्यक्ष कुलदीप अरोड़ा ने बताया कि राजस्थान के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 11 गोल्ड, 16 सिल्वर 20 ब्रोंज़ मेडल सहित 47 मेडल जीते। राजस्थान टीम मैनेजर कि भूमिका अनीता मालव और राजस्थान टीम कोच की भूमिका मोहित वैष्णव और सहायक कोच विक्रम धाकड़ ने निभाई। इधर, प्रतियोगिता में चित्तौड़गढ़ के वॉरियर्स अकादमी के खिलाड़ियों ने नेशनल लेवल पर नाम रोशन किया है। चित्तौड़गढ़ के वॉरियर्स एकेडमी में सबसे कम उम्र के एकांश आगनानी स्पीड किकिंग में गोल्ड मेडल व सेल्फ डिफेंस में ब्रॉन्ज जीता। अमय ने स्पीड किकिंग में ब्रॉन्ज, पीयूष ने सेल्फ डिफेंस में गोल्ड, देवेश ने स्पीड किकिंग में ब्रॉन्ज मेडल, कशिश ने सेल्फ डिफेंस में सिल्वर मेडल, कृतिका जैन को सेल्फ डिफेंस में गोल्ड, शाकिर ने सेल्फ डिफेंस में सिल्वर, हितांश ने स्पीड किकिंग में गोल्ड जीता। इसमें एकांश ने चित्तौड़गढ़ जिले का सबसे कम उम्र का गोल्ड मेडल जीता है।चित्तौड़गढ़ के सबसे कम उम्र के एकांश अगनानी ने फास्ट किकिंग में नेशनल में गोल्ड हासिल व सेल्फ डिफेंस में ब्रॉन्ज हासिल किया।

किसी रोगी की मौत हुई तो विरोध कर रहे जूनियर डॉक्टरों पर होगा एफआईआर : कुणाल घोष

एजेंसी

कोलकाता । पश्चिम बंगाल में स्वास्थ्य क्षेत्र में जारी संकट को समाप्त करने के लिए सरकार सक्रिय है। सोमवार को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने नवान्न में आंदोलनकारी चिकित्सकों के साथ बैठक के लिए समय निर्धारित किया है। हालांकि, जूनियर डॉक्टर बिना किसी शर्त के इस बैठक में शामिल होने के निर्णय पर अड़े हुए हैं। ऐसे में यह सवाल उठ रहा है कि क्या जूनियर डॉक्टर वास्तव में इस गतिरोध को समाप्त करना चाहते हैं। इसी बीच तृणमूल कांग्रेस के नेता कुणाल घोष ने हड़ताल के खिलाफ सख्त रुख अपनाते हुए आंदोलनकारी जूनियर डॉक्टरों को आड़े हाथों लिया है। डॉक्टरों ने मांगे पूरी नहीं होने पर मंगलवार को संपूर्ण हड़ताल का ऐलान किया है। कुणाल घोष ने मंगलवार को डॉक्टरों की हड़ताल के कारण किसी मरीज को नुकसान होने पर एफआईआर दर्ज कराने की चेतावनी दी है। उन्होंने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर लिखा, अगर मुख्यमंत्री द्वारा बुलाई गई बैठक को जानबूझकर अनुचित हठ के कारण विफल किया गया और मंगलवार को स्वास्थ्य हड़ताल के नाम पर अराजकता फैलाने की कोशिश की गई, तो बंगाल के किसी भी मरीज को हुए नुकसान के लिए निकटतम थाने में डॉ. देवाशीष हलदार और डॉ. अनिकेत महतो के खिलाफ एफआईआर दर्ज होनी चाहिए। ये ही षड्यंत्र के मुख्य सूत्रधार हैं। उनके साथ संबंधित संस्थानों और डॉक्टरों के नाम भी जोड़े जाएंगे। चिकित्सा आपका मौलिक अधिकार है। किसी भी प्रकार की उकसावे से इसे छीनना कानूनन अपराध है।

कुणाल घोष ने यह भी कहा, अगर अनशन के कारण जूनियर डॉक्टरों में से किसी को भी कोई नुकसान होता है, तो इसके लिए भी यही लोग और उनको उकसावे देने वाले लोग जिम्मेदार होंगे।ह्व उन्होंने आंदोलनकारी डॉक्टरों से एक बार फिर अनशन वापस लेने की अपील की और कहा, ₹मुख्यमंत्री बार-बार अभिभावक जैसी संवेदनशीलता दिखा रही हैं। इसका सम्मान करते हुए अनशन समाप्त करें और चर्चा के लिए आगे आएं। वामपंथी, अति-वामपंथी या विपक्ष के जाल में न फंसे।

कुणाल घोष की एफआईआर की चेतावनी का विरोध जूनियर डॉक्टर किंजल नंद ने किया है। उनका कहना है कि अनशन का निर्णय पश्चिम बंगाल जूनियर डॉक्टर्स फ्रंट द्वारा सामूहिक रूप से लिया गया है। देवाशीष या अनिकेत ने इसे अकेले नहीं लिया है। उल्लेखनीय है कि नौ अगस्त को आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल के सेमिनार हॉल से एक महिला डॉक्टर का शव बरामद किया गया था। इस घटना के बाद न्याय और सुरक्षा सहित विभिन्न मांगों को लेकर जूनियर डॉक्टरों ने आंदोलन शुरू किया था। उन्होंने लंबे समय तक हड़ताल भी की। उस समय मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने खुद स्वास्थ्य भवन के सामने धरने पर बैठे डॉक्टरों से मुलाकात की थी और हड़ताल खत्म करने की अपील की थी। आखिरकार लंबी खींचतान के बाद हड़ताल वापस ले ली गई थी।

शहीद पुलिसकर्मियों के साहस व समर्पण याद किये जाते रहेंगे : डीआईजी

एजेंसी

डेहरी आन सोन। देश के आंतरिक सुरक्षा में शहीद हुए पुलिसकर्मियों के साहस ,समर्पण और उनकी सेवा को हम कभी नहीं भूलेंगे। शाहाबाद पुलिस प्रक्षेत्र के डीआईजी नवीन चंद्र झा ने सोमवार को रोहतास जिले के डेहरी आन सोन स्थित पुलिस लाइन में पुलिस संस्मरण दिवस पर देश व राज्य के आंतरिक सुरक्षा में शहीद हुए पुलिसकर्मियों को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उक्त बातें कही।

उन्होंने कहा कि पुलिस संस्मरण दिवस पर हम अपने उन सहकारियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं जिन्होंने पिछले 1 वर्ष के दौरान देश में अमन चयन भाईचारा एवं सामाजिक सहिष्णुता बनाए रखने के क्रम में कर्तव्य की बाली बेदी पर अपने प्राणों की आहुति थी यह देश एवं हम देशवासी इनके वरदान के समक्ष नतमस्तक है तथा हम सभी उनके ऋणी रहेंगे। उन्होंने कहा कि एक वर्ष के दौरान देश में 214 पुलिसकर्मियों ने कर्तव्य की बाली बेदी पर अपने प्राणों की आहुति थी जिसमें हमारे

राज्य बिहार के 15 साथी भी वीरगति को प्राप्त हुए। उन्होंने बताया कि आज ही के दिन 1959 में भारत चीन सीमा पर लद्दाख की बर्फीली ऊंचाई के बीच हॉट स्प्रिंग नामक स्थल पर केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक छोटी टुकड़ी पर चीनी आक्रमणकारियो ने अचानक हमला कर दिया था वहां देश की सीमा की रक्षा पर तैनात 11 बहादुर जवानों ने अंतिम सांस तक लड़ते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी ।1961 में इस दिन को पुलिस संस्मरण दिवस के रूप में मनाया जाने का निर्णय दिया गया तब से यह गौरवपूर्ण परंपरा नियमित रूप से निभाई जा रही है। डीआईजी व एसपी रौशन कुमार ने जिले के कर्तव्य के दौरान शहीद हुए बलिदानी पुलिस कर्मियों के परिजनों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित व नमन किया । संस्मरण दिवस की शुरूआत में जिला पुलिस बल के जवानों ने शस्त्र झुका कर शहीद जवानों को सलामी दी। डीआईजी ,एसपी ,एसडीपीओ कोटा किरण कुमार समेत अन्य डीएसपी व पुलिस अधिकारियों ने शहीद स्मारक पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी । इधर,बिहार विशेष सशस्त्र पुलिस दो ने भी संस्मरण दिवस पर शहीद पुलिसकर्मियों को श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया।कमांडेंट लिपि सिंह के नेतृत्व में अमर शहीद स्मारक पर पुष्प अर्पित कर शहीद पुलिस कर्मियों को श्रद्धासुमन अर्पित किया गया । श्रद्धांजलि देने वाले में डीएसपी कल्याण आनंद,नागेन्द्र शर्मा,अरुण कुमार सिंह ,पुलिस मेंस यूनियन के रविरंजन कुमार ,महेंद्र कुमार सिंह आदि शामिल थे ।

एक भारत - श्रेष्ठ भारत की थीम पर आधारित है राष्ट्रीय एकता शिविर : कुलपति

एजेंसी

भागलपुर। हरियाणा के हिसार स्थित चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय में 23 अक्टूबर से 29 अक्टूबर तक चलने वाले राष्ट्रीय एकता शिविर के लिए कुलपति ने राष्ट्रीय सेवा योजना की टीम को सोमवार को रवाना किया। राष्ट्रीय सेवा योजना तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय का दल पूरे बिहार का प्रतिनिधित्व हरियाणा में होने वाले कैंप में करेगी। कुलपति प्रो जवाहर लाल ने राष्ट्रीय एकता शिविर के महत्व को उजागर करते हुए कहा कि भारत की सांस्कृतिक विविधता के संरक्षण के साथ-साथ एक भारत श्रेष्ठ भारत के मूल मंत्र के लिए राष्ट्रीय एकता तस्वीर का आयोजन किया जाता है। मौके पर मौजूद कार्यक्रम समन्वयक डॉ. राहुल कुमार को बधाई देते हुए कुलपति ने कहा कि पूरे बिहार का नेतृत्व करने के लिए एनएसएस टीएमबीयू का चयन किया जाना गर्व की बात है। कार्यक्रम समन्वयक डॉ राहुल कुमार ने कहा कि सभी 6 वालंटियर अलग-अलग महाविद्यालय के हैं। ऐसा इसलिए किया गया है ताकि सभी इकाई को प्रतिनिधित्व प्राप्त हो सके। चयनित प्रतिभागियों में एस. एम. कॉलेज से प्राची प्रिया, तारर कॉलेज से विनीता भारती, पूरनमल बाजोरिया से पल्लवी कुमारी, मारवाड़ी कॉलेज से अक्षय कुमार, बी. एन. कॉलेज से गुलजार अली, न्यू होराइजन महाविद्यालय से भोला कुमार के साथ कार्यक्रम अधिकारी के रूप में पी. बी. टी. टी. कॉलेज के डा. शैलेश मिश्र का चयन किया गया है।

विरोध करने पर महिला की हत्या, चालक ने अंधेरी सड़क पर हेडलाइट बंद कर कुचला

एजेंसी

कोलकाता। नदिया जिले में एक दर्दनाक घटना सामने आई है। रानाघाट के तहत आने वाले ताहेरपुर थाना क्षेत्र में रविवार रात एक महिला को एक तेज रफ्तार पिकअप वैन ने कुचल दिया। इस घटना में पुलिस ने वाहन चालक को गिरफ्तार कर लिया है और वाहन को जब्त कर लिया गया है। मृतक महिला का नाम तंद्रा विश्वास (32) है, जो अपने पति सुजन विश्वास के साथ बाइक से घर लौट रही थी।

पुलिस के अनुसार, सुजन विश्वास, जो स्थानीय औषधि व्यवसायी हैं, अपनी पत्नी तंद्रा को लेकर बाइक से रात को दुकान बंद करके घर लौट रहे थे। तभी रास्ते में एक इंजन वैन चालक से बाइक खड़ी करने को लेकर दोनों के बीच विवाद हो गया। इस विवाद के बाद इंजन वैन चालक ने एक पिकअप वैन को फोन करके

बुलाया। झगड़ा सुलझने के कुछ समय बाद ही पिकअप वैन चालक ने अचानक अपनी गाड़ी की रफ्तार बढ़ाई और तंद्रा विश्वास को कुचलते हुए भाग निकला।

सूत्रों के अनुसार, रविवार रात सुजन और तंद्रा बाइक पर ताहेरपुर की ओर जा रहे थे। रास्ते में तंद्रा का चश्मा गिर गया, जिसे उठाने के लिए उन्होंने बाइक रोकी। उसी वक्त एक इंजन वैन आ रही थी और वैन चालक ने तंद्रा और सुजन के साथ गाली-गलौज की। सुजन ने इसका विरोध किया और दोनों के बीच हाथापाई भी हो गई। इसके बाद वैन चालक ने पिकअप वैन को फोन करके बुलाया। कुछ ही देर में पिकअप वैन चालक वहां पहुंचा और उसने सुजन के साथ मारपीट शुरू कर दी। मामला सुलझने के बाद दोनों पक्ष अपनी-अपनी दिशा में जाने लगे।

लेकिन, पिकअप वैन चालक ने अचानक से अपनी गाड़ी की रफ्तार बढ़ाई, हेडलाइट बंद की और तंद्रा को टक्कर मार दी। इस हादसे में तंद्रा के साथ दो और लोग घायल हो गए। मौके पर मौजूद लोगों ने तंद्रा को अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सुजन विश्वास का आरोप है कि यह सुनियोजित हत्या थी। उन्होंने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है और चालक पर हत्या का आरोप लगाया गया है। रानाघाट की एसडीपीओ शैलजा दास ने सोमवार को कहा कि हमने पिकअप वैन चालक के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

दस माह के मासूम ने चबाया सांप,परिजनों के उड़े होश

नवादा। नवादा में एक अजीबोगरीब मामला सामने आया है, जहां एक 10 माह के बच्चे ने सांप को मुंह में दबा लिया। इस घटना के बाद पूरे गांव में सनसनी फैल गयी। खेल-खेल में मुंह में दबोचा सांप ये पूरा मामला नवादा नगर थाना क्षेत्र के शिवनगर मोहल्ले का है। बताया जा रहा है कि शिवनगर मोहल्ले के निवासी चंद्रमणिकांत का 10 माह का बच्चा हर्ष राज घर में खेल रहा था। तभी सांप उसके पास आया, जिसे हर्ष ने नादानी में उसे पकड़ लिया और खेलते-खेलते उसे अपने मुंह में दबा लिया। हालांकि, जब बच्चे पर उसके पिता की नजर गई तो वह हैरान रह गए। आनन-फानन में बच्चे के मुंह से उस सांप को निकाला और फिर सांप को मार डाला। इसके बाद घर के लोग बच्चे और मरे हुए सांप को लेकर आनन-फानन में सदर अस्पताल पहुंचे, जहां बच्चे का चिकित्सकों ने इलाज किया।डॉक्टरों की माने तो बच्चा पूरी तरह स्वस्थ है। मृत सांप को कोई केंचुआ कहता है तो कई जगह उसे ग्रामीण भाषा में तेलिया सांप कहा जाता है।फिलहाल बच्चे की हालत खतरे से बाहर है और डॉक्टरों ने उसे डिस्चार्ज कर दिया है।

संक्षिप्त खबरें

पुलिसकर्मियों का बलिदान हमें सच्ची सेवा का संदेश देता है : मंत्री टेटवाल

भोपाल। कौशल विकास एवं रोजगार राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम टेटवाल ने सोमवार को शहीद पुलिसकर्मियों को श्रद्धांजलि अर्पित की और नमन किया। मंत्री टेटवाल ने कहा कि पुलिसकर्मियों का सर्वोच्च बलिदान हमें सच्ची सेवा और कर्त्तव्य-परायणता का संदेश देता है, जो सदैव प्रेरणादायी रहेगा। मंत्री टेटवाल पुलिस बल के शहीद जवानों को उनकी अमर और प्रेरणादायी स्मृतियों को समर्पित 'पुलिस स्मृति दिवस' पर राजगढ़ जिला मुख्यालय स्थित पुलिस परेड ग्राउंड में आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने शहीद पुलिसकर्मियों के परिजन को शॉल और श्रीफल देकर सम्मानित भी किया।

कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने किया दो सड़कों का भूमि पूजन

देहरादून। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने सोमवार को मसूरी देहरादून विकास प्राधिकरण द्वारा स्वीकृत मसूरी विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत सड़कों का भूमि पूजन किया। राजपुर रोड स्थित वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के आवास के सामने वाली कॉलोनी में स्वीकृत 6.29 लाख की लागत से तथा मुख्य राजपुर के ढाकपट्टी में लागत 7.76 लाख रुपये से सी.सी.सड़क निर्माण कार्यों का भूमि पूजन विधि विधान से किया गया। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने एमडीडीए के अधिकारियों को निर्माण में सामग्री की गुणवत्ता का विशेष ध्यान देने और निर्धारित समय सीमा के भीतर निर्माण कार्य पूर्ण करने के भी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश की धामी सरकार आम जनमानस की भावनाओं के अनुरूप कार्य कर रही है।

बाइक के टायर में फंसी महिला की गर्दन, मौत

अजमेर। करवा चौथ का व्रत खोलकर पति और बेटियों के साथ घूमने निकली महिला की सड़क हादसे में मौत हो गई। पीछे से आई एक तेज रफ्तार बाइक ने इनके स्कूटर को टक्कर मार दी। पूरा परिवार स्कूटर से नीचे गिर गया। इस दौरान महिला की गर्दन बाइक के पहिए और मडगार्ड के बीच फंस गई, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। पति और दोनों बेटियां घायल हो गई। हादसा अजमेर में पुष्कर रोड पर हुआ। क्रिश्चनगंज थाना प्रभारी अरविंद सिंह ने बताया कि अ आआफायसागर रोड स्थित कीर्ति नगर निवासी मनदीप कौर (30) रविवार रात को करवा चौथ का व्रत खोलने के बाद अपने पति गुरप्रीत और 2 बेटियों हरलीन (12) और लवलीन (8) के साथ स्कूटर पर घूमने निकली थी।

पैर फिसलने से नदी में गिरी युवती की मौत

गोपेश्वर। चमोली जिले के थराली विकास खंड के रूईसान डूंगरी निवासी एक युवती की सोमवार को प्राणमति नदी पर बने अस्थायी पुल से पैर फिसल कर नदी में गिर जाने से मौत हो गई। थाना प्रभारी थराली पंकज कुमार ने बताया कि मृतका की पहचान रूईसान डूंगरी निवासी 18 वर्षीय रीना पुत्री तारा दत्त देवराडी के रूप में हुई है। युवती अपनी मामी के साथ सोमवार की सुबह घास लेने के लिए जंगल जा रही थी। वह प्राणमति नदी पर बने लकड़ी के अस्थाई पुल से पैर फिसल जाने के कारण नदी के तेज बहाव में बह गई, जिसे स्थानीय व्यक्तियों की ओर से नदी से निकाल कर थराली अस्पताल में लाया गया।

पुलिस ने वाहन चोर पकड़ा, आठ बाइक बरामद

फरीदाबाद। जिले में वाहन चोरी करने वाले आरोपी को पुलिस चौकी दयाल बाग की टीम ने गिरफ्तार किया है। फिलहाल आरोपी से आठ मोटरसाइकिल बरामद की गई हैं। पुलिस प्रवक्ता ने सोमवार को बताया कि गिरफ्तार आरोपी योगेश कुमार (21) वासी शिव दुर्गा विहार लक्कड़पुर फरीदाबाद का रहने वाला है। पुलिस टीम ने गश्त के दौरान गुप्त सूत्रों से प्राप्त सूचना से रेड कर आरोपी को चोरी की मोटरसाइकिल सहित दयाल बाग एरिया में शराब के ठेके से पास से काबू किया है। आरोपी से मौके पर बरामद मोटरसाइकिल गुप्ता कॉलोनी से चोरी की गई थी।

पुलिस मुठभेड़ में बदमाश गोली लगने से घायल

कानपुर। जाजमऊ थाना क्षेत्र में रविवार की रात मोटर साइकिल सवार बदमाश से पुलिस की मुठभेड़ हो गई। मुठभेड़ के दौरान पैर में गोली लगने से बदमाश घायल हो गया। पुलिस टीम ने उसे गिरफ्तार किया और उपचार के लिए तत्काल अस्पताल में भर्ती कराया है। पुलिस उपायुक्त पूर्वी श्रवण कुमार सिंह ने बताया कि गोली से घायल बदमाश शामली जनपद के थाना झिंझाना के खानपुर गांव का निवासी राजेश पुत्र जनार्दन है। इसके खिलाफ उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त चंडीगढ़, पंजाब समेत अन्य प्रान्तों में आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं। पूछताछ के दौरान घायल बदमाश ने बताया कि जाजमऊ के तिवारीपुर चौराहे के समीप रविवार की सुबह लगभग 6 बजे टहलने के लिए निकले एक व्यक्ति के गले से सोने की चेन लूटकर फरार हो गया था।

सीएम ने बलिदानी पुलिसकर्मियों की वीर गाथा को यादकर दी श्रद्धांजलि

राष्ट्रीय सुरक्षा की बुनियाद हैं वीर बलिदानी : धामी

देहरादून। एजेंसी

पुलिस स्मृति दिवस पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने बलिदानी पुलिसकर्मियों की वीर गाथा को याद करते हुए उनकी वीरता को नमन किया और उन्हें श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि आने वाली पीढ़ी भी पुलिस स्मृति दिवस का स्मरण करें। ये सभी वीर बलिदानी राष्ट्रीय सुरक्षा की बुनियाद हैं। उनका बलिदान सभी के लिए प्रेरणास्रोत रहेगा। ऐसे वीर जवानों की वीरता का स्मरण करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश में राष्ट्रीय पुलिस स्मारक की स्थापना की है, जो पुलिस बल के अद्वितीय समर्पण और बलिदान का जीवंत प्रतीक है।

मुख्यमंत्री धामी पुलिस स्मृति दिवस पर सोमवार को रेसकोर्स स्थित पुलिस लाइन में एक श्रद्धांजलि सभा में मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि राष्ट्रीय पुलिस स्मारक आने वाली पीढ़ियों को न केवल जवानों की वीरता और साहस की गाथाओं से परिचित कराएगा बल्कि यह उन्हें कर्तव्यनिष्ठा और राष्ट्र सेवा के प्रति प्रेरित करने का एक सशक्त माध्यम भी बनेगा। पुलिस स्मृति दिवस न केवल वीर जवानों का श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर है, बल्कि आज का दिन यह भी स्मरण कराता है कि पुलिस बल कर्तव्यनिष्ठा, साहस और अद्वितीय समर्पण के साथ प्रतिदिन अपने दायित्वों का निर्वहन करता है। पिछले कुछ वर्षों में पुलिस ने हर एक चुनौतियों का सामना किया है। आतंकवाद हो, देश के विभिन्न क्षेत्रों में नक्सलवाद हो, प्राकृतिक आपदा हो या फिर कानून व्यवस्था से जुड़ी जटिल परिस्थितियां हो। हर परिस्थिति में हमारी पुलिस ने अदम्य साहस और वीरता, विवेक का अभूतपूर्व परिचय दिया है।

● पुलिस बल कर्तव्यनिष्ठा, साहस और अद्वितीय समर्पण के साथ प्रतिदिन अपने दायित्वों का निर्वहन करता है

आधुनिक चुनौतियों से निपटने के लिए बनानी होगी ठोस योजना

मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि आधुनिक युग में अपराध का स्वरूप भी बदल रहा है। ऐसे में पुलिस की भूमिका और भी महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण दोनों ही हो जाती है। सरकार का संकल्प है कि वर्ष 2025 तक उत्तराखंड को ड्रग्स फ्री देवभूमि के रूप में स्थापित करेंगे और नशा को जड़ से उखाड़ फेकेंगे। धामी ने कहा कि मातृशक्ति का उत्तराखंड राज्य गठन में विशेष योगदान रहा है। उन्हें सुरक्षित माहौल प्रदान करने के लिए प्रदेश के प्रत्येक थानों में महिला हेल्पडेस्क के साथ क्यूआरटी का गठन किया गया है।

उन्होंने कहा कि उत्तराखंड राज्य भौगोलिक और सामरिक दृष्टि से राष्ट्र की सुरक्षा के लिए अत्यंत संवेदनशील और महत्वपूर्ण है।

जम्मू-कश्मीर में अभी भी शांति भंग करने की कोशिश कर रहा है पाकिस्तान : मनोज

श्रीनगर। एजेंसी

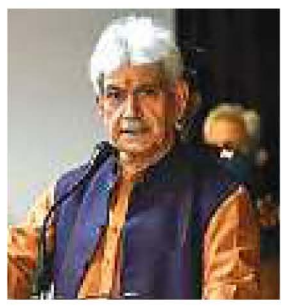

गांदरबल में आतंकी हमले में सात लोगों के मारे जाने पर उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने सोमवार को कहा कि पाकिस्तान अभी भी निर्दोष लोगों की हत्या करने और जम्मू-कश्मीर में शांति भंग करने की कोशिश कर रहा है। सिन्हा ने पुलिस से गांदरबल आतंकी हमले की जांच करने को कहा ताकि पीड़ितों और उनके परिवारों को न्याय मिल सके। उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने श्रीनगर पुलिस शहीद दिवस समारोह में कहा कि कल गांदरबल जिले के गुंड में एक निमार्णाधीन सुरंग पर हुए कायरतापूर्ण आतंकी हमले को नहीं भूलेंगे, जिसमें कश्मीर के एक डॉक्टर और छह गैर-स्थानीय मजदूरों की मौत हो गई जबकि पांच लोग घायल हो गए।

उन्होंने कहा कि भारत पर पड़ोसी देश की ओर से अभी भी खतरा है। उन्होंने कहा कि यह अभी भी इस क्षेत्र में निर्दोष लोगों को मारने और यहां शांति को अस्थिर करने की कोशिश कर रहा है। सिन्हा ने कहा कि नशीली दवाओं की तस्करी को रोकने और आतंकवाद विरोधी अभियानों में सुधार की जरूरत है। उन्होंने कहा कि हमें यहां नशीली दवाओं की तस्करी को रोकने की जरूरत है। हमें संभावित खतरों के बारे में जागरूक होने की जरूरत है। हमें आतंकवाद विरोधी अभियानों में सुधार करने की जरूरत है। उपराज्यपाल ने कहा कि निर्दोष लोगों की रक्षा की जानी चाहिए लेकिन दोषियों को बख्शा नहीं जाना चाहिए।

उपराज्यपाल ने कर्तव्य निर्वहन के दौरान शहीद हुए लोगों को श्रद्धांजलि दी और कहा कि उनके बलिदान को हमेशा याद रखा जाएगा। उन्होंने कहा कि हमारे सुरक्षा बलों ने जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी है।

ग्रामीण चिकित्सकीय सेवाओं को सशक्त करना शासन की सर्वोच्च प्राथमिकता : राजेन्द्र

भोपाल। एजेंसी

उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं को सशक्त करना शासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों का सुदृढ़ीकरण कर फर्स्ट रेफरल यूनिट के रूप में विकसित करने के लिए विशेषज्ञ चिकित्सकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने सोमवार को सुपर स्पेशलिटी अस्पतालों, मेडिकल कॉलेजों और अन्य चिकित्सा संस्थानों में पदोन्नति की प्रक्रिया की समीक्षा की और नियमों के अनुसार प्रक्रिया को शीघ्रता से पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं के गुणवत्तापूर्ण प्रदाय के लिए चिकित्सकीय मैनपॉवर का मनोबल और उत्साहवर्धन अत्यंत आवश्यक है। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने मंत्रालय में विभिन्न विभागीय विषयों की समीक्षा करते हुए स्वास्थ्य सेवाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए महत्वपूर्ण निर्देश दिये। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने आईपीएचएस मानकों के अनुसार भर्ती प्रक्रिया की अद्यतन स्थिति की समीक्षा की और समयबद्ध रूप से पूर्ण करने के निर्देश दिये। प्रशासनिक औपचारिकताओं की पूर्ति में कमी से प्रक्रिया में व्यवधान नहीं आये यह सुनिश्चित किया जाये। उन्होंने कहा कि सुरक्षित मातृत्व सुनिश्चित करने और मातृ मृत्यु दर तथा शिशु मृत्यु दर में सुधार के उद्देश्य से सोनोलॉजिस्ट की उपलब्धता आवश्यक है। ग्रामीण क्षेत्रों में सोनोलॉजिस्ट की सेवा के लिए प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे चिकित्सा अधिकारियों की नियुक्ति प्रक्रिया के लिए तकनीकी समस्याओं का निदान कर प्रक्रिया पूर्ण की जाये।

पाकिस्तान की संसद में 26वां संविधान संशोधन विधेयक पारित

सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस का कार्यकाल तीन साल तक सीमित करने का रास्ता साफ

इस्लामाबाद। एजेंसी

आखिरकार पाकिस्तान की हुकूमत को संविधान संशोधन विधेयक पारित कराने पर कामयाबी मिल गई। इसके लिए हुकूमत को समर्थन जुटाने के लिए करीब एक माह तक कड़ी मशक्कत करनी पड़ी। नेशनल असेंबली ने करीब पांच घंटे की बहस के बाद आज तड़के विवादास्पद 26वें संविधान संशोधन विधेयक को पारित कर दिया। पाकिस्तान के प्रमुख समाचार पत्र डॉन की वेबसाइट पर उपलब्ध विवरण के अनुसार, 336 सदस्यों वाली नेशनल असेंबली में मतदान के दौरान 225 सदस्यों ने विधेयक का समर्थन किया। संशोधन पारित करने के लिए सरकार को 224 मत की जरूरत थी। डॉन के अनुसार, 26वें संवैधानिक संशोधन विधेयक को संवैधानिक पैकेज के रूप में भी जाना जाता है। संसद के दोनों सदनों से अनुमोदन के बाद अब यह कानून बन गया।

इस विधेयक को शुरूआत में सीनेट ने दो-तिहाई बहुमत के साथ हरी झंडी दी थी। इसे रविवार देररात 11:36 बजे नेशनल असेंबली में कानूनमंत्री आजम नजीर तरार ने प्रस्तुत किया। इस पर रात को करीब पांच घंटे तक बहस हुई। अंततः यह सुबह पांच बजे पारित हो गया। हालांकि पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) और सुन्नी-इत्तेहाद परिषद (एसआईसी) के 12 सदस्यों ने इसका विरोध किया।

जमीयत उलेमा-ए-इस्लाम-फजल के पांच सीनेटर और बलूचिस्तान नेशनल पार्टी-मेंगल (बीएनपी-एम) के दो सांसदों ने भी विधेयक के पक्ष में मतदान किया। विधेयक में सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस की नियुक्ति के लिए 12 सदस्यीय आयोग गठित करने का प्रस्ताव है। साथ ही मुल्क के प्रधान न्यायाधीश की नियुक्ति को तीन वर्ष के लिए सीमित करने का प्रावधान है।

रायबरेली में सड़क हादसे में चचेरे भाई समेत तीन की मौत

रायबरेली। जिले में सरेनी थाना क्षेत्र में भीषण सड़क हादसे में तीन युवकों की दर्दनाक मौत हो गई। हादसा उस समय हुआ जब दो चचेरे भाई सहित एक अन्य युवक दो बाइकों से अपने घर आ रहे थे। सोमवार सुबह राहगीरों ने युवकों को लालगंज डलमऊ मुख्य मार्ग पर मृत अवस्था में पड़े देखा और पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर जांच शुरू कर दी है। सरेनी थाना क्षेत्र के पूरे लालू मजरे बेनी माधवगंज निवासी प्रशांत पुत्र दिनेश बाजपेई समेत पूरे चंद्रशेखर मजरे गोपाली खेड़ा में रहने वाले शिवेंद्र मिश्रा पुत्र संतोष मिश्रा और गोपाल मिश्रा पुत्र महेश मिश्रा ने अपने परिजनों से बीती रात रविवार को मित्र के घर जाने की बात कहकर दो बाइकों से घर से निकले थे। सोमवार सुबह लालगंज डलमऊ मुख्य मार्ग पर बहाई गांव के पास तीनों मृत अवस्था में सड़क किनारे पड़े मिले। उनकी दुर्घटना किस वाहन से हुई यह किसी को पता नहीं चल सका है। मृतक प्रशांत बाजपेई अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र था।

विदेश भेजने के नाम पर दो युवकों से ठगी

फतेहाबाद। विदेश भेजने के नाम पर रतिया के दो युवकों से लाखों की ठगी करने का मामला सामने आया है। आरोपी दोनों युवकों को पहले दुबई और फिर मलेशिया में फंसा दिया। मलेशिया में गुरूद्वारे की संगत ने दोनों युवकों के पासपोर्ट दिलवाकर उन्हें वापस इंडिया भेजा। इस मामले में पुलिस ने सोमवार को केस दर्ज कर लिया है। पुलिस को दी शिकायत में गांव लाली निवासी परमानंद ने कहा कि वह अपने लडके मिद्धू को विदेश का वर्क वीजा लगवाकर जर्मन भेजना चाहता था। इस पर उसने एजेंट संदीप कुमार से बात की। संदीप ने 15 दिन में वर्क वीजा लगवाकर उसके लडके को जर्मन भेजने की बात कही और इस पर 13 लाख 50 हजार का खर्च बताया। संदीप ने बताया कि इस काम में उसके साथ उसकी पत्नी पूजा, उसका साला रवि व अन्य पार्टनर प्रदीप व विकास चन्द्र हाल्टर उफ विक्की भी है। वे सभी मिलकर लोगों को विदेश भेजने का काम करते हैं।

कर्तव्य पालन करते हुए शहीद पुलिस जवान हमारे लिए प्रेरणाश्रोत : डॉ अजय

जौनपुर। एजेंसी

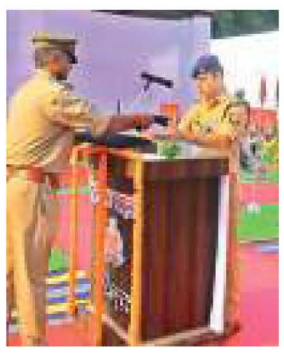

पुलिस स्मृति दिवस पर सोमवार को कर्तव्य पालन के दौरान शहीद हुए पुलिस अधिकारियों व कर्मचारियों को पुलिस लाइन में आयोजित कार्यक्रम में उन्हें नमन किया गया। इस मौके पर पुलिस अधीक्षक डॉ अजय पाल शर्मा ने शहीद पुलिस जवानों को याद कर शहीद स्मारक पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर परेड को सम्बोधित करते हुए एसपी डॉ अजय पाल शर्मा ने वीर जवानों की याद में आयोजित कार्यक्रम में कहा कि अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अदम्य साहस के साथ बदमाशों से मुठभेड़ में प्राणों को न्यौछावर करने वाले उत्तर प्रदेश पुलिस के शहीद जवानों हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। एसपी ने इस मौके पर उपस्थित पुलिसकर्मियों के साथ पावन स्मृति पुस्तिका को पढ़कर कर्तव्य की वेदी पर प्राणों की आहुति देने वाले शहीद पुलिसकर्मियों को याद करते हुए दो मिनट का मौन रखा। उन्होंने कहा कि आपके द्वारा देश के लिए जो बलिदान दिया गया है उसका पूरा देश सदैव ऋणी रहेगा। उन्होंने शहीदों के परिजनों के स्वास्थ्य व उज्जवल भविष्य की कामना की।

उत्तर प्रदेश उपचुनाव में भाजपा सभी सीटें जीत रही : सतीश चंद्र शर्मा

अमेठी। एजेंसी

उत्तर प्रदेश सरकार में राज्यमंत्री और जिले के प्रभारी मंत्री सतीश चंद्र शर्मा ने सोमवार को यहां कहा कि प्रदेश में होने वाले उपचुनाव में इस बार भाजपा सभी नौ सीटों पर जीत दर्ज करेगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और समाजवादी पार्टी ने बीते लोकसभा चुनाव में जिस तरीके से जनता को गुमराह करने का काम किया हैं, जनता उनके मंसूबों को जान चुकी है।

कई जगहों का निरीक्षण करने के बाद राज्यमंत्री कस्बे के कान्हा गौशाला पहुंचे। गौशाला के रहन सहन एवं चारा भूसा संबंधी जानकारी ली। मौजूद गायों को गुड़ और फल खिलाया। उन्होंने ग्राम पंचायत भर्ती पूर्व के लोनियापुर गांव में प्राइमरी स्कूल एवं आंगनबाड़ी केंद्र का निरीक्षण किया। इस दौरान नन्हे मुन्ने बच्चों से बातचीत कर उनका हौसला अफजाई किया।

निरीक्षण में प्रभारी मंत्री के साथ भाजपा जिला अध्यक्ष राम प्रसाद मिश्रा, जिला उपाध्यक्ष भवानी दत्त दीक्षित, जिला पंचायत अध्यक्ष राजेश कुमार अग्रहरी, नगर पंचायत अध्यक्ष अंजू कसौधन, मुख्य विकास अधिकारी सूरज पटेल, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी संजय कुमार तिवारी सहित भाजपा नेता काशी तिवारी आदि लोग मौजूद रहे। पत्रकारों से वार्ता करते हुए राज्यमंत्री सतीश चंद्र शर्मा ने कहा कि यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मार्गदर्शन पर उत्तर प्रदेश सरकार तेजी के साथ आगे बढ़ रहा है। सभी जिले में मेडिकल कॉलेज का निर्माण हो रहा है। विकास की रफ्तार योगी जी के नेतृत्व में तेज हुई है। मुझे पूरा भरोसा है कि आने वाले समय में जो उपचुनाव होने जा रहे हैं।

धार्मिक स्वरूप को ध्यान में रखते हुए अधोसंरचना विकास के कार्य किए जाएंगे: डॉ. मोहन

● हरिद्वार की तर्ज पर उज्जैन में भी साधु-संतों, अखाड़ा प्रमुखों- महामंडलेश्वरों के लिए बनाए जाएंगे स्थायी आश्रम

उज्जैन। एजेंसी

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि उज्जैन में हरिद्वार के तर्ज पर साधु संतों, महंत, अखाड़ा प्रमुखों, महामंडलेश्वर आदि को स्थाई आश्रम बनाने की अनुमति दी जाएगी। उज्जैन की पहचान साधु-संतों से है। साधु-संतों को उज्जैन में आने, ठहरने, कथा, भागवत इत्यादि और अन्य आयोजन के लिए पर्याप्त रूप से भूमि भूखंड की आवश्यकता पड़ती है। इसे ध्यान में रखते हुए प्रदेश सरकार द्वारा साधु-संतों के हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए स्थायी आश्रम बनाए जाने की योजना बनाई गई है। निजी होटल्स में साधु-संतों और श्रद्धालुओं को इस प्रकार के आयोजनों के लिए चुनौतियां आती हैं और महंगा भी पड़ता है। यहां 12 वर्षों में एक बार आयोजित होने वाला सिंहस्थ का आयोजन 2028 में किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को उज्जैन में सिंहस्थ के संबंध में आयोजित प्रेस-वार्ता को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर सांसद अनिल फिरोजिया, राज्यसभा सांसद बालयोगी उमेशनाथ महाराज, विधायक अनिल जैन कालूहेड़ा, विधायक सतीश मालवीय,महापौर मुकेश टटवाल, नगर निगम सभापति कलावती यादव, संभागायुक्त संजय गुप्ता, आईजी संतोष कुमार सिंह, कलेक्टर नीरज कुमार सिंह, एसपी प्रदीप शर्मा सहित मीडिया प्रतिनिधि उपस्थित थे।

उन्होंने कहा कि हरिद्वार की तरह उज्जैन को धार्मिक शहर के रूप में विकसित करने के लिए सभी जनप्रतिनिधियों के साथ मिलकर कार्ययोजना तैयार की गई है। सभी प्रकार के फोरलेन, सिक्सलेन ब्रिज आदि स्थायी अधोसंरचना विकास के कार्य किए जाएंगे। सभी मूलभूत सुविधाओं के विकास के साथ साधु-संतों के लिए आश्रम निर्माण के कार्य समानांतर रूप से किए जाएंगे। समाज के इच्छुक सनातन धर्मावलंबियों के माध्यम से अन्न क्षेत्र, धर्मशाला, आश्रम, चिकित्सा केंद्र, आयुर्वेद केंद्र आदि सार्वजनिक गतिविधियों के संचालन कार्य को भी प्राथमिकता दी जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि उज्जैन सहित प्रदेश के सर्वांगीण विकास के लिए प्रदेश सरकार निरंतर आगे बढ़ रही है। समान रूप से विकास से सभी की खुशहाली के द्वार खुलेंगे। सभी देव स्थानों के आसपास हमारे धमार्चार्य आ जाए यह हमारी प्राथमिकता हैं। उन्होंने कहा कि साधु-संतों को आश्रम निर्माण के लिए अनुमति इस प्रकार दी जाएगी कि पांच बीघा में से एक बीघा भूखंड पर ही भवन का निर्माण किया जा सकेगा। शेष चार बीघा भूखंड खुला रहेगा, जिसमें पार्किंग आदि व्यवस्थाओं के लिए पर्याप्त खुला स्थान रहे। यह अनुमति केवल साधु-संतों, महंत, अखाड़ा प्रमुखों, महामंडलेश्वर को ही दी जाएगी।

मूलभूत सुविधाओं के लिए भी स्थाई अधोसंरचना का निर्माण किया जाएगा

मुख्यमंत्री ने कहा कि हरिद्वार में जिस प्रकार साधु-संतों के अच्छे आश्रम बने हुए हैं, उसी प्रकार विकास के क्रम को जारी रखते हुए उज्जैन में भी साधु संतों के स्थायी आश्रम बनाने के प्रयास किए जाएंगे। उज्जैन विकास प्राधिकरण के माध्यम से इस बड़ी योजना को आकार दिया जाएगा। सभी साधु-संतों, महंत, अखाड़ा प्रमुखों, महामंडलेश्वर सभी को आमंत्रित कर उनके स्थायी आश्रम बनाने की दिशा में काम करेंगे। सिंहस्थ के दृष्टिगत सड़क, बिजली, पेयजल, जल निकासी इत्यादि मूलभूत सुविधाओं के लिए भी स्थाई अधोसंरचना का निर्माण किया जाएगा। ताकि अस्थाई निर्माण से होने वाली समस्याएं निर्मित ना हों।

बेहतर शिक्षण के लिए तकनीक का प्रयोग आवश्यक : विक्रम सिंह

नारनौल। एजेंसी

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि) महेंद्रगढ़ में आयोजित दक्षता विकास कार्यक्रम में चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय (सीडीएलयू) सिरसा के विक्रम सिंह तथा महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय (एमडीयू) रोहतक के प्रो. निर्मल सिंह विशेषज्ञ वक्ता के रूप में मौजूद रहे। विशेषज्ञ वक्ता प्रो. विक्रम सिंह ने कहा कि आज समय आंकड़ों का है। अगर हमें टेक्नोलोजी और साफ्टवेयर का सही तथा सटीक प्रयोग करना आ गया तो फिर हम निश्चित रूप से आगे बढ़ने में सफल होंगे।

उन्होंने कहा कि हमें तकनीक प्रयोग करते हुए अपनी निजी जानकारी कही पर भी शेयर नहीं करनी चाहिए और हमें विभिन्न लॉगइन आईडी के लिए एक ही पासवर्ड तथा इमेल प्रयोग नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें कम्प्यूटरए लैपटाप का प्रयोग करते हुए हाक्सवेयर वार्निंग वायरस अलर्टए रैनसैम वेयर होक्स वेयर फिशिंग मेल आदि से बचना होगा। हमें डिजिटल लिटरेट होना होगा। इसी क्रम में प्रो. निर्मल कुमार ने कहा कि आज का समय ई.रिसोर्स का है।

संक्षिप्त खबरें

द हंड्रेड टीमों के लिए बोली लगाने वाली फ्रैंचाइजियों में एमआई, सीएसके, एसआरएच और केकेआर शामिल

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की आधा दर्जन से ज्यादा फ्रैंचाइजियों ने इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) द्वारा संचालित 100-बॉल लीग द हंड्रेड में औपचारिक रूप से रुचि दिखाई है। शुक्रवार, 18 अक्टूबर को पहले दौर की बोलियाँ जमा करने की समयसीमा थी, और आधिकारिक तौर पर रुचि दिखाने वालों में से ज्यादातर भारतीय निवेशक हैं, खास तौर पर आईपीएल फ्रैंचाइजी। क्रिकबज के अनुसार, चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके), सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच), लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी), मुंबई इंडियंस (एमआई), कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) और दिल्ली कैपिटल्स (डीसी) ने बोलियां जमा की हैं। हालांकि इसकी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन समझा जाता है कि राजस्थान रॉयल्स ने भी बोली लगाई है, साथ ही महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) की एक फ्रैंचाइजी यूपी वॉरियर्स ने भी बोली लगाई है, जिसका स्वामित्व दुबई स्थित कैप्री ग्लोबल ग्रुप के पास है। मैनचेस्टर यूनाइटेड के सह-मालिक और आईएलटी20 में डेजर्ट वाइपर्स टीम के संचालक, एवरम ग्लेजर की लांसर कैपिटल्स ने भी बोली में भाग लिया है। दिलचस्प बात यह है कि ब्रिटिश फर्म डियाजियो के स्वामित्व वाली रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने पंजाब किंग्स की तरह ही बोली नहीं लगाई।

इथियोपियाई एथलीटों ने जीता एम्स्टर्डम मैराथन

द हेग। इथियोपिया के एथलीट त्सेगाये गेटाचेव ने रविवार को एम्स्टर्डम मैराथन जीत लिया है, जबकि यालेमजेरफ येहुआलॉ महिला वर्ग में जीत हासिल की। गेटाचेव ने 2:05:38 के समय के साथ एम्स्टर्डम मैराथन में अपनी दूसरी जीत हासिल की। उनके ठीक पीछे इथियोपिया के बोकी असेफा थे, जो 2:05:40 के समय के साथ दूसरे स्थान पर रहे, और इजराइल के मारू टेफरी, जो 2:05:42 के समय के साथ तीसरे स्थान पर आए। महिलाओं की दौड़ में, पसंदीदा यालेमजर्फ येहुआलॉ ने 2:16:52 में जीत हासिल करते हुए एक नया कोर्स रिकॉर्ड बनाया। इथियोपिया की ही हेवन हैलू 2:19:29 के व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ समय के साथ दूसरे स्थान पर रहीं, जबकि केन्या की विनफ्रिदा मोसेटी तीसरे स्थान पर रहीं।

टाटा स्टील शतरंज इंडिया रैपिड और ब्लिट्ज टूर्नामेंट का नेतृत्व करेंगे मैग्नस कार्लसन

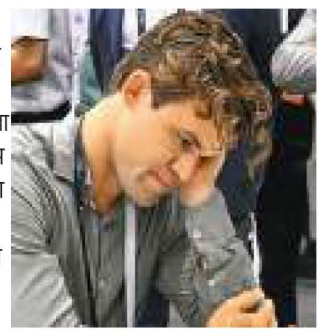

नई दिल्ली। विश्व नंबर 1 और पांच बार के पूर्व विश्व चैंपियन मैग्नस कार्लसन 13 से 17 नवंबर तक कोलकाता के धोनो धान्यो ऑडिटोरियम में टाटा स्टील शतरंज इंडिया रैपिड एंड ब्लिट्ज टूर्नामेंट (टीएससीआई) में भाग लेने के लिए तैयार हैं। 2019 में खिताब जीतने के बाद यह इस आयोजन में कार्लसन की दूसरी उपस्थिति है। टूर्नामेंट के छठे संस्करण में भारत के शीर्ष पांच खिलाड़ियों में से तीन-अर्जुन एरिगैसी, आर. प्रगनानंद और विदित गुजराती भी शामिल होंगे। हालाँकि, वर्तमान विश्व नंबर 4 डी. गुकेश नवंबर-दिसंबर में सिंगापुर में चीन के डिंग लिरेन के खिलाफ होने वाले विश्व चैम्पियनशिप खिताबी मुकाबले के कारण इस प्रतियोगिता में भाग नहीं लेंगे। हाल ही में ग्लोबल शतरंज लीग (जीसीएल) में प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट चुने गए निहाल सरीन, एस.एल. नारायणन, ओपन वर्ग में भी भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे।

फिना तैराकी विश्व कप : चीन ने छह स्वर्ण 11 रजत और सात कांस्य पदक जीते

- तांग कियांटिंग ने महिलाओं की 50 मीटर ब्रेस्टस्ट्रोक में 28.76 के समय के साथ स्वर्ण पदक जीता

शंघाई। एजेंसी

शंघाई में रविवार को फिना तैराकी विश्व कप का समापन हुआ, जिसमें चीन ने कुल छह स्वर्ण, 11 रजत और सात कांस्य पदक जीते। प्रतियोगिता के अंतिम दिन तांग कियांटिंग और तांग मुहान ने एक-एक स्वर्ण पदक जीता। चीनी तैराकों ने महिलाओं की 800 मीटर फ्रीस्टाइल में शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक जीतकर पोडियम पर कब्जा किया। तांग मुहान ने 8:15.34 के समय के साथ पहला स्थान हासिल किया, उसके बाद गाओ वेइजहोंग और कोंग याकी का स्थान रहा। जीत के बाद तांग मुहान ने कहा, मैं परिणाम से संतुष्ट हूं क्योंकि यह मेरे वर्तमान प्रदर्शन की स्थिति को दर्शाता है। कुछ चीजों में सुधार की आवश्यकता है क्योंकि मैं शॉर्ट कोर्स तैराकी करने का आदी नहीं हूं। मुझे शॉर्ट कोर्स प्रतियोगिताओं में अधिक तेजी से मुड़ने के बेहतर तरीके खोजने की आवश्यकता है। तांग कियांटिंग ने महिलाओं की 50 मीटर ब्रेस्टस्ट्रोक में 28.76 के समय के साथ स्वर्ण पदक जीता, जिससे एशियाई रिकॉर्ड टूट गया। दो स्वर्ण पदकों के साथ, वह चीनी तैराकों में सबसे अधिक स्वर्ण पदक जीतने के मामले में किन हैयांग के साथ बराबरी पर आ गईं। विश्व चैंपियन किन हैयांग ने पुरुषों की 200 मीटर ब्रेस्टस्ट्रोक में रजत पदक जीता, उन्होंने विश्व कप में कुल दो स्वर्ण और एक रजत पदक के साथ अपना अभियान समाप्त किया।

यू यितिंग ने महिलाओं की 100 मीटर बटरफ्लाई और 200 मीटर व्यक्तिगत मेडले में दो रजत पदक अर्जित किए। इसके अतिरिक्त, स्विट्जरलैंड की नोए पोंटी ने सुबह की हीट के दौरान पुरुषों की 50 मीटर बटरफ्लाई में 21.67 के समय के साथ विश्व रिकॉर्ड तोड़ा। चीन के पुरुषों की 100 मीटर फ्रीस्टाइल ओलंपिक चैंपियन पैन झानले 200 मीटर फ्रीस्टाइल हीट में 1:44.13 के समय के साथ नौवें स्थान पर रहीं, जो फाइनल में पहुंचने से केवल 0.06 सेकंड दूर थीं। फ्रांस के तैराकी स्टार लियोन मार्चैंड ने रविवार को पुरुषों की व्यक्तिगत मेडले में अपना दबदबा कायम रखते हुए 400 मीटर मेडले में जीत हासिल की, इसके अलावा उन्होंने 100 मीटर और 200 मीटर स्पधाओं में भी स्वर्ण पदक जीते।

2024 फिना तैराकी विश्व कप में तीन चरण होंगे। शंघाई इवेंट के बाद, प्रतियोगिताएँ 24 से 26 अक्टूबर तक इंचियोन में और 31 अक्टूबर से 2 नवंबर तक सिंगापुर में आयोजित की जाएंगी। तीनों विश्व कप इवेंट दिसंबर में बुडापेस्ट में होने वाली शॉर्ट कोर्स विश्व चैंपियनशिप के लिए क्वालीफायर के रूप में भी काम करेंगे।

तीरंदाजी: दीपिका ने जीता अपना पांचवां रजत, धीरज पहले दौर से बाहर

ट्लाक्सकाला (मेक्सिको)। एजेंसी

भारतीय रिकर्व तीरंदाज दीपिका कुमारी ने यहां चीन की ली जियामन से 0-6 से हारने के बाद विश्व कप फाइनल में अपना पांचवां रजत पदक जीता। दिसंबर 2022 में अपनी बेटी के जन्म के तीन साल बाद विश्व कप फाइनल में वापसी करते हुए, चार बार की ओलंपियन दीपिका को आठ-तीरंदाज क्षेत्र में तीसरी वरीयता दी गई थी। सेमीफाइनल में उनका प्रदर्शन आसान रहा, लेकिन शायद उनपर, चौथी वरीयता प्राप्त ली जियामन के खिलाफ स्वर्ण पदक मैच का दबाव आ गया। विश्व कप फाइनल में यह दीपिका की नौवीं उपस्थिति थी जहां उन्होंने कांस्य पदक भी जीता। डोला बनर्जी विश्व कप फाइनल में स्वर्ण पदक जीतने वाली एकमात्र भारतीय तीरंदाज हैं, जिन्होंने दुबई 2007 में पोडियम में शीर्ष स्थान हासिल किया था।

पुरुष रिकर्व वर्ग में, धीरज बोम्मदेवरा 4-2 से आगे होने के बावजूद, शुरूआती दौर में दक्षिण कोरिया के पेरिस ओलंपिक कांस्य पदक विजेता, ली वू सियोक की चुनौती से पार नहीं पा सके और जल्दी बाहर हो गए। पांच सदस्यीय भारतीय दल, जिसमें तीन कंपाउंड और दो रिकर्व तीरंदाज शामिल थे, ने इस प्रकार अपने सीजन के अंत विश्व कप फाइनल अभियान का समापन केवल एक पदक के साथ किया।

पंजाब एफसी ने स्थानीय फुटबॉल प्रतिभाओं को बढ़ावा देने के लिए खोले छह नए विकास केंद

मोहाली। एजेंसी

राउंडग्लास पंजाब एफसी ने पंजाब भर में छह नए विकास केंद्रों की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य अगली पीढ़ी के फुटबॉल खिलाड़ियों को पोषित करना है। इस विस्तार के साथ, राउंडग्लास पंजाब एफसी अब 15 विकास केंद्र संचालित कर रहा है, जो जमीनी स्तर पर फुटबॉल को बढ़ावा देने और क्षेत्र के युवा खिलाड़ियों को सशक्त बनाने के प्रति संगठन की प्रतिबद्धता को दशार्ता है। नए केंद्र पंडोरी रण सिंह और बिबीपुरा (तारन तारन), धिलवां (कपूरथला), जैतो सरजा (गुरदासपुर), संत बाबा हरि सिंह मॉडल स्कूल (महलपुर), और मुस्ताबाद (फतेहगढ़ साहिब) में कार्यरत होंगे। इन नए विकास केंद्रों में कुल 560 बच्चों - 470 लड़कों और 90 लड़कियों - को प्रशिक्षण दिया जाएगा। इन केंद्रों में फुटबॉल खिलाड़ियों को व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम, विशेषज्ञ कोचिंग और महत्वपूर्ण संसाधन प्रदान किए जाएंगे, ताकि वे अपने कौशल को निखार सकें और अपनी पूरी क्षमता तक पहुंच सकें। यह पहल राउंडग्लास स्पोर्ट्स के मिशन का हिस्सा है, जिसमें खेल सहभागिता को युवाओं के समग्र कल्याण (शारीरिक, भावनात्मक और सामाजिक आयामों) का एक आवश्यक घटक माना गया है।

राउंडग्लास स्पोर्ट्स के फुटबॉल निदेशक निकोलाओस टोपोलियाटिस ने कहा हम मानते हैं कि हर बच्चे को उस खेल को खेलने का मौका मिलना चाहिए जिसे वे प्यार करते हैं। इन नए विकास केंद्रों की स्थापना के माध्यम से, हमारा उद्देश्य युवा खिलाड़ियों के लिए एक समावेशी वातावरण तैयार करना है।

महिला एकल में विश्व की नंबर 1 टेनिस खिलाड़ी बनीं एरिना सबालेंका

नई दिल्ली। एजेंसी

बेलारूस की महिला टेनिस खिलाड़ी एरिना सबालेंका ने पोलैंड की स्टार खिलाड़ी इगा स्वियाटेक को पछाड़कर डब्ल्यूटीए महिला एकल रैंकिंग में फिर से शीर्ष स्थान हासिल कर लिया है। उन्होंने पिछली बार सितंबर 2023 में नंबर 1 रैंकिंग हासिल की थी। वूमेन टेनिस एसोसिएशन (डब्ल्यूटीए) द्वारा सोमवार को जारी नवीनतम डब्ल्यूटीए रैंकिंग में दुनिया की नई नंबर एक खिलाड़ी के अब 9,706 अंक हो गए हैं, जबकि स्वियाटेक के 9,665 अंक हैं। सबालेंका और स्वियाटेक के बीच 41 अंकों का अंतर हैं। सबालेंका ने दुनिया की नंबर एक महिला एकल खिलाड़ी बनने पर अपनी खुशी व्यक्त की। उन्होंने सोशल मीडिया एक्स पर एक पोस्ट में कहा एन1 देखते हैं इस बार यह कब तक चलता है। 26 वर्षीय सबालेंका ने इस साल ऑस्ट्रेलियन ओपन और सीजन का आखिरी ग्रैंड स्लैम यूएस ओपन जीता। इसके अलावा सिनसिनाटी और वुहान में भी खिताब जीते।

रेलवे ने जीता चौथे हॉकी इंडिया नेशनल चैंपियनशिप का खिताब

नई दिल्ली। एजेंसी

रेलवे स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड (आरएसपीबी) की महिला टीम ने इंडियनऑयल लिमिटेड को 3-1 से हराकर चौथे हॉकी इंडिया सीनियर महिला इंटर-डिपार्टमेंटल नेशनल चैंपियनशिप 2024 का खिताब जीत लिया है। यहां मेजर ध्यानचंद नेशनल हॉकी स्टेडियम में आयोजित इस रोमांचक फाइनल में भारत की शीर्ष हॉकी खिलाड़ियों की मौजूदगी ने मुकाबले को और भी शानदार बना दिया।

मुकाबला बेहद कड़ा था और 18वें मिनट में इंडियनऑयल की दीपिका ने शानदार गोल करके अपनी टीम को बढ़त दिलाई। हालांकि, रेलवे की टीम ने तुरंत वापसी की और भारत की सबसे अनुभवी खिलाड़ी वंदना कटारिया ने अगले ही मिनट में जोरदार हिट के साथ स्कोर बराबर कर दिया। दोनों टीमों के बीच चौथे क्वार्टर तक मुकाबला बराबरी का रहा, लेकिन अंत में रेलवे की कप्तान नवनीत कौर के गोल ने उनकी टीम को बढ़त दिलाई।

इसके बाद भारतीय स्टार सलीमा टेटे के निर्णायक गोल ने रेलवे की 3-1 की जीत सुनिश्चित कर दी। पिछले साल उपविजेता रही रेलवे की टीम ने इस बार अपने प्रदर्शन से बाजी पलट दी और खिताब अपने नाम किया, जबकि इंडियनऑयल को रनर-अप ट्रॉफी से संतोष करना पड़ा।

रेलवे की सलीमा टेटे को फाइनल में उनके शानदार प्रदर्शन के लिए प्लेयर ऑफ द मैच घोषित किया गया। इससे पहले, केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) ने कांस्य पदक मैच में स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (साई) को पेनल्टी शूटआउट में हराया। नियमित समय के दौरान कोई गोल नहीं हुआ, जिसके बाद पेनल्टी शूटआउट में सीबीडीटी ने रोमांचक जीत दर्ज की।

व्यापार

हाई लेवल मिनिस्ट्रियल पैनल का फैसला उसना चावल से खत्म होगी एक्सपोर्ट ड्यूटी

नई दिल्ली। एजेंसी

केंद्र सरकार ने नॉन बासमती व्हाइट राइस (सफेद चावल) से मिनिमम एक्सपोर्ट प्राइस (न्यूनतम निर्यात मूल्य) को खत्म करने का फैसला लिया है। इसके साथ ही उसना चावल (पारब्वाएल्ड राइस) पर लगने वाली 10 प्रतिशत एक्सपोर्ट ड्यूटी को भी खत्म करने का फैसला लिया गया है। ये फैसले हाई लेवल मिनिस्टीरियल पैनल की बैठक में लिए गए। जल्दी ही इस संबंध में केंद्र सरकार की ओर से नोटिफिकेशन जारी कर दिया जाएगा। माना जा रहा है कि सरकार के इस फैसले के बाद अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारत से होने वाले चावल के निर्यात में और तेजी आ सकेगी।

सरकार की ओर से नॉन बासमती व्हाइट राइस के निर्यात के लिए 490 डॉलर प्रति टन का न्यूनतम निर्यात मूल्य (एमईपी) तय किया गया था। इसी तरह उसना चावल पर 10 प्रतिशत एक्सपोर्ट ड्यूटी लगाई गई थी। इसकी वजह से अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय चावल की कीमत औसत कीमत से अधिक हो गई थी, जिससे चावल के निर्यातकों को नुकसान का सामना करना पड़ रहा था। पिछले सप्ताह ही इंडियन राइस एक्सपोर्टर्स फेडरेशन (आईआरईएफ) के प्रतिनिधियों ने केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल से मुलाकात करके नॉन बासमती व्हाइट राइस के लिए तय मिनिमम एक्सपोर्ट प्राइस (एमईपी) को खत्म करने और उसना चावल पर लगने वाले एक्सपोर्ट ड्यूटी को हटाने की मांग की थी।

आईआरईएफ का कहना है कि फिलहाल देश में ओपन मार्केट सेल स्कीम (ओएमएसएस) के तहत 235 लाख टन चावल का विशाल स्टॉक मौजूद है। इसके अलावा इस सीजन में 275 लाख टन अतिरिक्त चावल के बाजार में आने की उम्मीद है। इस तरह देश में चावल का विशाल भंडार इकट्ठा हो जाएगा। ऐसे में चावल उत्पादक किसानों और चावल के कारोबारियों को तभी राहत मिल सकती है, जब अंतरराष्ट्रीय बाजार में चावल के निर्यात के लिए उन्हें बंदिशों से मुक्त होकर काम करने का मौका मिले।

चार दिन की तेजी के बाद सोने में मामूली गिरावट, चांदी की बढ़ी चमक

नई दिल्ली। एजेंसी

घरेलू सर्राफा बाजार में लगातार चार दिन की तेजी के बाद सोने की कीमत में मामूली गिरावट नजर आ रही है। दूसरी ओर, चांदी के भाव में मामूली तेजी दर्ज की गई है। सोने की कीमत में आई गिरावट के कारण देश के ज्यादातर सराफा बाजारों में 24 कैरेट सोना 79,560 रुपये से लेकर 79,410 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना 72,920 रुपये से लेकर 72,790 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। सोने के विपरीत चांदी के भाव में तेजी आने के कारण दिल्ली सर्राफा बाजार में ये चमकीली धातु 99,400 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर है। देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना 79,560 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 72,920 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 79,410 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 72,790 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 79,460 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 72,820 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 79,410 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 72,790 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 79,410 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 72,790 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

मिडकैप और स्मॉलकैप की बिकवाली से निवेशकों के 4.80 लाख करोड़ डूबे

उतार-चढ़ाव का सामना करने के बाद लाल निशान में बंद हुआ शेयर बाजार, सेंसेक्स और निफ्टी लुढ़के

नई दिल्ली। एजेंसी

पूरे दिन उतार-चढ़ाव का सामना करने के बाद घरेलू शेयर बाजार सोमवार को गिरावट के साथ बंद हुआ। कारोबार की शुरूआत मजबूती के साथ हुई लेकिन बाजार खुलते ही मुनाफा वसूली शुरू हो जाने के कारण सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांकों ने लाल निशान में गोता लगा दिया। हालांकि, खरीदारों ने बीच में कई बार लिवाली का जोर बना कर बाजार को सहारा देने की कोशिश भी की लेकिन कारोबार में ज्यादातर समय बिकवाली का दबाव ही बना रहा।

पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.09 प्रतिशत और निफ्टी 0.29 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुए। कारोबार के दौरान पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज, मेटल और आईटी सेक्टर के शेयरों में सबसे अधिक बिकवाली होती रही। इसी तरह एफएमसीजी, फार्मास्यूटिकल, बैंकिंग, कैपिटल गुड्स, कंज्यूमर ड्युरेबल्स, ऑयल एंड गैस, टेक और रियल्टी इंडेक्स भी गिरावट के साथ बंद हुए।

दूसरी ओर, ऑटोमोबाइल सेक्टर के शेयरों में खरीदारी होती रही। ब्रॉडर मार्केट में भी लगातार बिकवाली का दबाव बना रहा, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 1.63 प्रतिशत की गिरावट के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 1.51 प्रतिशत की कमजोरी के साथ आज के कारोबार का अंत किया। शेयर बाजार में मिडकैप और स्मॉलकैप शेयरों में हुई जोरदार बिकवाली के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में पौने पांच लाख करोड़ रुपये से भी अधिक की की कमी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन कारोबार के बाद घट कर 453.35 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया।

संक्षिप्त समाचार

जिला यातायात प्रबंध समिति की बैठक में कलेक्टर ने यातायात नियमों की पूर्ण पालना

- सड़क दुर्घटनाओं पर लगाम लगाने और एक्सीडेंट फ्री सड़क विकसित करने के दिये आवश्यक दिशा-निर्देश

चमकता राजस्थान। जयपुर! (खलील कुरैशी) 21 अक्टूबर। जयपुर जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने सोमवार को कलक्ट्रेट सभागार में जिला यातायात प्रबंध समिति की बैठक ली तथा अधिकारियों को राष्ट्रीय एवं राज्य राजमार्गों पर सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिये पुराने साइनेज को हटाकर नये साइनेज लगाने,यातायात नियमों की पूर्ण पालना करवाने, एक्सीडेंट फ्री सड़क चिन्हित और विकसित करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अधिकारियों को राजमार्गों पर फ्लाइओवर का निर्माण कार्य गुणवत्तापूर्ण तथा जल्द से जल्द पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने जयपुर एव जयपुर ग्रामीण जिले में एक्सीडेंट फ्री सड़क को चिन्हित एवं विकसित करने के भी निर्देश दिये ताकि उन्हें आदर्श सड़क के रूप में पहचान दिलाकर अन्य सड़कों एवं राजमार्गों पर भी सुगम यातायात की व्यवस्था करें एवं दुर्घटना रोका जाना सुनिश्चित किया जा सके।उन्होंने जयपुर जिले के शहरी, ग्रामीण क्षेत्र के राष्ट्रीय एवं राज्य मार्गों पर भारत सरकार के नये नोटिफिकेशन के अनुसार स्पीड लिमिट के साइनेज बोर्ड लगाने, राजमार्गों के प्रोटोकॉल के अनुसार चिन्हित ब्लैक स्पॉट्स का निवारण करने , जिले में यातायात नियमों की पालना सुनिश्चित करने और राजमार्गों पर अनाधिकृत पार्किंग हटाने, रिफ्लेक्टिव टेप के उल्लंघन के विरूद्ध प्रभावी कार्रवाई करने के निर्देश दिये। उन्होंने जयपुर विकास प्राधिकरण और राजस्थान राज्य सड़क विकास निगम के अधिकारियों को पिछली बैठक के बिन्दुओं की अनुपालना रिपोर्ट पेश करने के लिए निर्देशित किया।बैठक में पुलिस उप आयुक्त यातायात सागर,अतिरिक्त जिला कलक्टर मुकेश कुमार मूंड जयपुर विकास प्राधिकरण, परिवहन विभाग, सार्वजनिक निमार्ण विभाग सहित संबंधित विभागों के अधिकारी और मुस्कान फाउंडेशन के पदाधिकारी भी उपस्थित रहे।

पुलिस महानिदेशक साहू ने दी मंजूरी

डीजीपी डिस्क के लिए एडीजी मालिनी अग्रवाल, विशाल बंसल और वीके सिंह का चयन

सराहनीय कार्यों के लिए 61 पुलिस अधिकारियों और पुलिसकर्मियों का होगा सम्मान

चमकता राजस्थान

जयपुर!(खलील कुरैशी) 21 अक्टूबर। पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) उत्कल रंजन साहू ने प्रदेश में पुलिसिंग के क्षेत्र में सराहनीय कार्यों के लिए 61 पुलिस अधिकारियों और कार्मिकों को 'महानिदेशक पुलिस प्रशस्ति डिस्क एवं प्रशस्ति रोल' एवं 'महानिदेशक पुलिस डिस्क एवं प्रशस्ति रोल' सहित नकद ईनाम मय प्रशस्ति पत्र देने की मंजूरी प्रदान की गई है। एडीजी मालिनी अग्रवाल, एडीजी विशाल बंसल और एडीजी विजय कुमार सिंह को भी डीजीपी डिस्क देने की घोषणा की गई है। इन पुलिस अधिकारियों और पुलिस कर्मियों को आगामी दिनों में आयोजित होने वाले समारोह में सम्मानित किया जाएगा।डीजीपी साहू ने बताया कि प्रदेश में इस साल की शुरूआत में 58वें पुलिस महानिदेशक/महानिरीक्षक सम्मेलन-2023 का आयोजन जयपुर में किया गया था। इस सम्मेलन के सफल आयोजन में सराहनीय सेवाओं के लिए अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस, प्रशिक्षण (तत्कालीन पद हाल एडीजी सिविल राइट्स एंड एएचटी) मालिनी अग्रवाल, अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस, कानून एवं व्यवस्था विशाल बंसल और अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस, एटीएस एवं एसओजी विजय कुमार सिंह को 'महानिदेशक पुलिस प्रशस्ति डिस्क एवं प्रशस्ति रोल' प्रदान किया जाएगा। एडीजी श्री बंसल का दूसरी बार इस सम्मान के लिए चयन हुआ है। साहू ने बताया कि इसके अलावा 58वें पुलिस महानिदेशक/महानिरीक्षक सम्मेलन-2023 में उत्कृष्ट योगदान के लिए उप महानिरीक्षक पुलिस कार्मिक, जयपुर विकास पाठक (दूसरी बार चयन), अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, कम्यूनिटी पुलिसिंग सैयद मुस्तफा अली जैदी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, हाऊसिंग शिल्पा चौधरी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, केन्द्रीय भंडार, पुलिस मुख्यालय यशपाल त्रिपाठी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राज्य विशेष शाखा चन्द्रेश कुमार (दूसरी बार चयन), अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, राज्य विशेष शाखा भरतलाल मीना, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एसओजी पुष्पेन्द्र सिंह राठौड़, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, इंटेलीजेंस ट्रेनिंग अकादमी, शालिनी सक्सेना, पुलिस उप अधीक्षक, मुख्य भंडार, पुलिस दूरसंचार, अवनीश कुमार, डिप्टी कमांडेंट, पांचवी बटालियन आरएसी देशराज यादव, उप अधीक्षक, पुलिस प्रशिक्षण निदेशालय देवेन्द्र सिंह, पुलिस निरीक्षक, राज्य विशेष शाखा रामचंद्र मीना, पुलिस निरीक्षक, परिवहन, पुलिस मुख्यालय फतेह सिंह, पुलिस निरीक्षक (कार्यालय अतिरिक्त महानिदेशक, पुलिस

कल्याण) नीरज तिवाड़ी, कम्पनी कमांडर, 12 वीं बटालियन, आरएसी बजरंग सिंह, पुलिस निरीक्षक, राजस्थान पुलिस अकादमी नीलिमा अग्निहोत्री, स्टाफ ऑफिसर (कार्यालय अतिरिक्त महानिदेशक, पुलिस आर्म्ड बटालियन) विनीत कुमार पाठक तथा उप महानिरीक्षक, पुलिस परिवहन राजेश कुमार को 'महानिदेशक पुलिस प्रशस्ति डिस्क एवं प्रशस्ति रोल' प्रदान किया जाएगा।

डीजीपी ने बताया कि अपराध, प्रशासन, कानून व्यवस्था एवं इंटलिजेंस के क्षेत्र में निदेशक, राज्य विधि विज्ञान प्रयोगशाला अजय शर्मा, अतिरिक्त निदेशक, क्षेत्रीय विधि विज्ञान प्रयोगशाला राजवीर, उप निदेशक, राज्य विधि विज्ञान प्रयोगशाला डॉ. राजेश सिंह, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय विधि विज्ञान प्रयोगशाला, अजमेर राकेश रोशन शर्मा, कनिष्ठ वैज्ञानिक सहायक, प्रभारी मोबाईल फॉरेंसिक यूनिट, भीलवाड़ा हर्ष मीना, धौलपुर में पुलिस थाना सोने का गुर्जा के उप निरीक्षक (थानाधिकारी) यशपाल सिंह, उप निरीक्षक, पुलिस साइक्लोनर सैल, रेंज कार्यालय, जोधपुर प्रमीत चौहान, सहायक उप निरीक्षक, कार्यालय पुलिस उपायुक्त, जयपुर पूर्व, प्रद्युम्न कुमार (द्वितीय बार), हैड कांस्टेबल, जिला विशेष शाखा (साइबर सैल), जयपुर (दक्षिण) राम सिंह (द्वितीय बार), हैड कांस्टेबल, अपराध शाखा (साइबर सैल), जयपुर-दक्षिण लोकेश कुमार (द्वितीय बार), महिला कांस्टेबल थाना बाड़मेर-जीआरपी जोधपुर केशी देवी, कांस्टेबल थाना कैथूनीपोल (कोटा शहर) योगेन्द्र सिंह, कांस्टेबल आईआरएफ, जोधपुर राजुनाथ, कांस्टेबल आईआरएफ, जोधपुर रेंज पप्पाराम और कांस्टेबल, रिजर्व पुलिस लाइन जोधपुर ग्रामीण झूमरराम विश्नोई को 'महानिदेशक पुलिस डिस्क एवं प्रशस्ति रोल' से सम्मानित किया जाएगा।

साहू ने बताया कि अपराध, प्रशासन, कानून व्यवस्था एवं इंटलिजेंस के क्षेत्र में ही उप महानिरीक्षक पुलिस, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो, उदयपुर राजेन्द्र प्रसाद गोयल, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, सीआईडी विशेष शाखा जोन,जयपुर शहर धर्मेन्द्र सिंह सागर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, महिला अपराध अनुसंधान सेल, बूंदी भगवत सिंह हिंगड, सहायक पुलिस आयुक्त माणक चौक, जयपुर-उत्तर हेमंत जाखड़, आरपीएस (प्रोबेशनर), कार्यालय पुलिस अधीक्षक, धौलपुर अंगद शर्मा, पुलिस निरीक्षक, थानाधिकारी, थाना माणक चौक, जयुपर-उत्तर गुरू भूपेन्द्र सिंह, पुलिस निरीक्षक थानाधिकारी सुभाष चौक, जयुपर-उत्तर सुरेश चंद, निरीक्षक पुलिस, थानाधिकारी, पुलिस थाना प्रताप नगर, आयुक्तालय जोधपुर भुटाराम, पुलिस निरीक्षक, थानाधिकारी सविना, जिला उदयपुर फूलचंद, पुलिस निरीक्षक थानाधिकारी बयाना जिला भरतपुर सुनील कुमार, उप निरीक्षक, थानाधिकारी, पुलिस थाना गढ़ीबाजना, भरतपुर मुकेश कुमार, उप निरीक्षक, थानाधिकारी, पुलिस थाना रूदावल, भरतपुर योगेन्द्र सिंह (द्वितीय बार), उप निरीक्षक पुलिस, तत्कालीन थाना रूदावल हाल कार्यालय पुलिस अधीक्षक, करौली महावीर प्रसाद, कांस्टेबल थाना डग, झालावाड़ मुकेश कुमार, कांस्टेबल थाना डग, झालावाड बृजेश कुमार, कांस्टेबल कार्यालय महानिरीक्षक पुलिस रेंज, जयपुर प्रताप मीना, कांस्टेबल कार्यालय महानिरीक्षक पुलिस रेंज, जयपुर मनोज यादव, कांस्टेबल पुलिस थाना प्रताप नगर, आयुक्तालय, जयपुर श्याम लाल तथा कांस्टेबल साइबर क्राइम, पुलिस थाना धौलपुर अशोक कुमार को डीजीपी डिस्क एवं प्रशस्ति रोल दिया जाएगा।

इसी प्रकार खेल, प्रशिक्षण, सामान्य प्रशासन, कल्याण एवं पर्यवेक्षण के क्षेत्र में महानिरीक्षक पुलिस, आरएसी, जयपुर हाल पुलिस आयुक्त, जोधपुर राजेन्द्र सिंह तथा हैड कांस्टेबल पुलिस लाइन गंगानगर जीत सिंह का भी 'महानिदेशक पुलिस डिस्क एवं प्रशस्ति रोल' के लिए चयन किया गया है। वहीं अपराध, प्रशासन, कानून व्यवस्था एवं इंटलिजेंस के क्षेत्र में उप निरीक्षक, पुलिस थानाधिकारी, पुलिस थाना रानी-जिला पाली पन्नाराम और कांस्टेबल, पुलिस थाना, महेश नगर, जयपुर-दक्षिण रामजी लाल को प्रशस्ति पत्र मय 5 हजार रुपये नकद ईनाम दिया जाएगा।

समाज के प्रत्येक वर्ग को लेकर बढ़ेगें आगे, विकास कार्यो में नहीं आयेगी कोई कमी : पटेल

- ग्राम खड़ब स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विधालय में नवनिर्मित दो कक्षा कक्ष मय बरामदा का किया उद्घाटन
- विभिन्न विकास कार्यो का हुआ लोकार्पण

चमकता राजस्थान

कोटपूतली बहरोड (धर्मेंद्र बंसल) विधायक हंसराज पटेल सोमवार को निकटवर्ती ग्राम पंचायत खड़ब के दौरे पर रहे। इस दौरान उन्होंने खड़ब में ग्राम पंचायत द्वारा बनवाई जा रही विभिन्न सडकों समेत अन्य विकास कार्यो का लोकार्पण व शिलान्यास किया। वहीं राजकीय उच्च माध्यमिक विधालय, खड़ब में भामाशाह जगदीश चौहान, सुबेदार कृष्ण चौहान, विक्रम, अशोक, बुधराम आदि द्वारा स्व. दुल्लाराम, स्व. सायरमल व स्व. श्रीमती शचोकोरी देवी की पुण्य स्मृति में बनाये गये नवनिर्मित दो कक्षा कक्षों व बरामदों का भी फिता काटकर एवं पट्टीका का लोकार्पण कर उद्घाटन किया। इस दौरान आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुये उन्होंने कहा कि चाहे शिक्षा हो या फिर चिकित्सा से लेकर बिजली, पेयजल व सडक् निर्माण के कार्य, ग्रामीण क्षेत्रों के विकास कार्यो में कोई कमी नहीं आयेगी। इनमें प्रत्येक वर्ग व समाज को साथ लेकर आगे बढ़ेगें। पटेल ने कहा कि कोटपूतली में विकास कार्य निरन्तर गति पकड़ रहे है। आने वाले दिनों में बड़े कार्य भी सम्पन्न होगें। अध्यक्षता मालाराम सुद ने की। कार्यक्रम का उद्घाटन माँ सरस्वती के समक्ष द्वीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। इस दौरान सरपंच विक्रम छावड़ी, युवा मोर्चा के जिला संयोजक कमल कसाना, एड. विकास जांगल, पंसस दयाराम गुर्जर समेत बड़ी संख्या में अतिथिगण व ग्रामीण मौजूद रहे।

पुलिस शहीद दिवस पर आरपीए में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर, वृक्षारोपण सहित अनेक जनकल्याणकारी कार्यक्रमों हुआ भव्य आयोजन

117 पुलिस अधिकारियों और पुलिसकर्मियों ने किया रक्तदान

चमकता राजस्थान

जयपुर!(खलील कुरैशी) 21 अक्टूबर। पुलिस शहीद दिवस पर राजस्थान पुलिस अकादमी (आरपीए) में सोमवार को राज्य स्तरीय कार्यक्रम के बाद स्वैच्छिक रक्तदान शिविर, पौधारोपण और सफाई अभियान आयोजित किया गया। रक्तदान शिविर में 117 पुलिस अधिकारियों और पुलिस कर्मियों ने रक्तदान कर शहीद पुलिस कर्मियों को श्रद्धांजलि दी। डीजीपी यूआर साहू ने रक्तदान शिविर का अवलोकन कर रक्तदान करने वाले पुलिस अधिकारियों और पुलिस कार्मिकों का मनोबल बढ़ाया और इस नेक कार्य के लिए उनकी सराहना की। रक्तदान शिविर में डीजीपी (साइबर अपराध एवं एससीआरबी) हेमंत प्रियदर्शी, एडीजी एस. सेंगाथिर, डीआईजी राजीव पचार, डीआईजी दीपक भार्गव एवं विकास शर्मा एवं डीसीपी नॉर्थ राशि डोगरा सहित अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, उप पुलिस अधीक्षक एवं इंस्पेक्टर से लेकर हैड कांस्टेबल और कांस्टेबल तक के पुलिस अधिकारियों और पुलिस कर्मियों ने रक्तदान कर शहीद पुलिस कार्मिकों को श्रद्धांजलि दी।डीजीपी साहू ने इस अवसर पर आरपीए परिसर में शहीद पुलिस कार्मिकों की याद में पौधारोपण किया। इन कार्यक्रमों में पुलिस मुख्यालय, आरपीए और जयपुर कमिश्नरेट के पुलिस अधिकारियों सहित अन्य पुलिस अधिकारी और कार्मिक मौजूद रहे।

राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट-2024

निवेश प्रोत्साहन के लिए जिला कलक्टर ने वित्त विशेषज्ञों के साथ की चर्चा

चार्टेड अकाउंटेंट, कंपनी सेक्रेटरी एवं कोस्ट अकाउंटेंट ने दिये अपने सुझाव

चमकता राजस्थान

जयपुर, (खलील कुरैशी) 21 अक्टूबर। जयपुर जिले में निवेश प्रोत्साहन के लिए जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने सोमवार को जिला कलक्ट्रेट सभागार में वित्त विशेषज्ञों से विचार विमर्श किया।इस दौरान उन्होंने चार्टेड अकाउंटेंट, कंपनी सेक्रेटरी एवं कोस्ट अकाउंटेंट से राइजिंग राजस्थान के सफल आयोजन एवं जिले में ज्यादा से ज्यादा निवेश आकर्षित करने को लेकर चर्चा की।बैठक को संबोधित करते हुए उन्होंने बताया कि जयपुर, जयपुर ग्रामीण एवं दूदू जिलों की जिला स्तरीय इन्वेस्टर्स मीट का आयोजन 8 नवंबर 2024

को राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर, जयपुर में किया जाएगा। मीट के सफल आयोजन के लिए संपूर्ण जिले के उद्यमियों से संपर्क किया जा रहा है। बैठक में 2000 करोड के निवेश के प्रस्तावों पर सहमति बनी। जिसके तहत मंगलम ग्रुप द्वारा एक हजार करोड़ के निवेश से एक इडस्ट्रियल पार्क एवं स्पोटे सिटी के प्रस्ताव पर सहमति जाहिर की। वहीं, 500 करोड़ का एक एग्रीकल्चर युनिट तथा 150 करोड़ का एक रूफिंग शीट की युनिट एवं अन्य प्रस्तावों के तहत कुल 400 करोड़ के निवेश करारों पर सहमति बनी। वहीं, एसोसिएशन ऑफ गारमेंट एक्सपोर्टर्स सीतापुरा की ओर से भी 300 करोड़ के अतिरिक्त निवेश करार पर सहमति प्रदान की गई गौरतलब है कि एजीएक्ससी द्वारा पूर्व में भी 600 करोड़ के निवेश करार पर हस्ताक्षर किये गए थे।उन्होंने कहा कि वर्तमान परिपेक्षय में चार्टेड

- बैठक में दो हजार करोड़ रुपये के निवेश करारों पर बनी सहमति

अकाउंटेंट, कंपनी सेक्रेटरी एवं कोस्ट अकाउंटेंट जिला निवेश अनुपालन, वित्तीय प्रबंधन और रणनीतिक मार्गदर्शन सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। इनका सहयोग निवेशकों की निर्णय लेने की क्षमता एवं विश्वास को बढ़ाता है। अतः जयपुर जिले में अधिक से अधिक निवेश हेतु सरकार के साथ निवेश करार सुनिश्चित करने के लिए वांछित सहयोग एवं सलाह चाहने हेतु उक्त बैठक का आयोजन किया गया है।

राइजिंग राजस्थान' ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट 2024 एक नजर

''राइजिंग राजस्थान' ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट-2024 का आयोजन 9, 10 और 11 दिसंबर 2024 को राजधानी जयपुर में होगा। इसका आयोजन राजस्थान सरकार के तत्वाधान में उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टमेंट प्रोमोशन (बीआईपी) और राजस्थान स्टेट इंडस्ट्रियल डवलपमेंट एंड इन्वेस्टमेंट कॉरपोरेशन (रीको) के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है, जिसका नोडल विभाग बीआईपी है।इस त्रि-दिवसीय मेगा समिट का उद्देश्य देश-विदेश की बड़ी-छोटी कंपनियों, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं और निवेशकों को राज्य में आकर काम करने के लिए आमंत्रित करना, प्रदेश में विभिन्न तरह के उद्योग-धंधे लगाने में मदद करना और अन्य सुविधाएँ मुहैय्या कराना है। इस ग्लोबल समिट के दौरान कृषि, अक्षय ऊर्जा, शिक्षा और कौशल, ऑटो और ईवी (इलेक्ट्रिक व्हीकल्स), इंफ्रास्ट्रक्चर, केमिकल और पेट्रो-केमिकल, पर्यटन, स्टार्टअप, खनन और ईएसडीएम/आईटी और आईटीईएस सहित विभिन्न क्षेत्रों पर विशेष सत्र का आयोजन होगा।बैठक में अतिरिक्त जिला कलक्टर विनीता सिंह, महाप्रबंधक, जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र जयपुर शहर शिल्पी आर. पुरोहित, सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अभय सिंह चौहान के लिए एम बी प्रिंटर्स, सी 74 सुदर्शन पूरा, जयपुर से मुद्रित एवं 1ए देवी नगर विस्तार, देवी नगर गली नं. 6 जयपुर 302019 से प्रकाशित। सम्पादक : अभय सिंह चौहान,
मोबाइल : 9314505000 (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार) संपादक : खलील कुरैशी, मोबाइल : 7891542929